अष्टम माला, खंड 1, अंक 1

गुरूवार 17 जनवरी, 1985

27 पौष 1906 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

पहला सत्र
(आठवीं लोक सभा)

[खंड 1 में अंक 1 से 11 तक हैं]

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

प्राक्कथन

आठवीं लोक सभा के लोक सभा वाद-विवाद का यह पहला खण्ड है। सातवीं लोक सभा के अवसान तक लोक सभा वाद-विवाद के दो संस्करण निकाले जाते थे; (एक) मूल संस्करण जिस में सभा की कार्यवाही का विवरण उन्हीं भाषाओं में छापा जाता था जिनमें वह सभा में सम्पन्न हुई हो, पर जो भाषण क्षेत्रीय भाषाओं में दिए जाते थे उनका अंग्रेजी/हिन्दी अनुवाद सम्मिलित किया जाता था और उर्दू में दिए गए भाषणों को देवनागरी लिपि में छापा जाता था, पर साथ ही उन भाषाणों को प्रकोष्ठकों में फारसी लिपि में भी छापा जाता था; और (दो) हिन्दी संस्करण जिसमें हिन्दी में सम्पन्न हुई कार्यवाही को मूल रूप में, उर्दू में दिए गए भाषणों को देवनागरी लिपि में तथा अंग्रेजी में हुई कार्यवाही का एवं क्षेत्रीय भाषाओं में दिए गए भाषणों का हिन्दी अनुवाद छापा जाता था।

2. आठवीं लोक सभा के प्रथम सत्र से, लोक सभा की सामान्य प्रयोजन समिति के निर्णय के अनुसार, "लोक सभा वाद-विवाद" के दो संस्करण प्रकाशित किए जा रहे हैं; (एक) अंग्रेजी संस्करण जिसमें अंग्रेजी में सम्पन्न कार्यवाही मूल रूप में और हिन्दी या किसी क्षेत्रीय भाषा में हुई कार्यवाही का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित होगा; और (दो) हिन्दी संस्करण अपने वर्तमान रूप में, पर उर्दू भाषणों को देवनागरी लिपि में छापने के साथ उन्हें फारसी में प्रकोष्ठकों में भी छापा जाएगा।

3. इसके अलावा लोक सभा की कार्यवाही का मूल संस्करण भी केवल रिकार्ड और संदर्भ के लिए तैयार किया जा रहा है जिसकी सजिल्द प्रतियां संसद ग्रन्थालय में रखी जा रही हैं।

4. अंग्रेजी और हिन्दी दोनों संस्करणों में एक समुचित संकेत दिया जा रहा है, जो यह दर्शाएगा कि कार्यवाही का कौन सा अंश-विशेष मूल रूप में अंग्रेजी/हिन्दी में है और कौन सा अनूदित है।

5. आशा है कि अंग्रेजी और हिन्दी के ये अलग-अलग संस्करण सदस्यों एवं रुचि रखने वाले अन्य लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

सुभाष काश्यप
महासचिव।

नई दिल्ली,
जनवरी, 1985

85-M/J(N)181LSS—1

अष्टम माला, खण्ड 1, पहला सत्र 1985/1906 (शक)

अंक 3, गुरुवार, 17 जनवरी, 1985/27 पौष, 1906 (शक)

विषय	पृष्ठ
राष्ट्रपति का अभिभाषण—सभा पटल पर रखा गया	1–6
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	7
निधन सम्बन्धी उल्लेख (श्रीमती इन्दिरा गांधी का निधन)	8
अध्यक्ष महोदय	8
श्री सी० माधव रेड्डी	11
श्री राजीव गांधी	12
डा० सरदीश राय	12
श्री पी० वी० नरसिंह राव	13
श्री पी० कोलनदाईवेलु	14
श्रीमती मोहसिना किदवई	15
प्रो० मधु दंडवते	17
श्री बूटा सिंह	19
श्रीमती गीता मुखर्जी	22
प्रो० एन० जी० रंगा	22
श्री शरदचंद्र गोबिन्दराव पवार	24
श्री जी० जी० स्वेल	25
श्री मुहम्मद महफूज अली खां	26
श्री गिरधारी लाल डोगरा	27
श्री फ्रैंक एंथनी	28
प्रो. सैफुद्दीन सोज	33
श्री पीयूष तिरकी	34
श्री इब्राहिम सुलेमान सेट	35
श्री वंदुपाटला जंगा रेड्डी	36
श्री अमर रायप्रधान	36
श्री जार्ज जोसफ मुंडाकल	36
श्री सुल्तान सलाहुद्दीन ओवेसे	37

लोक सभा

गुरुवार, 17 जनवरी, 1985/27 पौष 1906 (शक)

लोक सभा 12.30 बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय : महासचिव ।

राष्ट्रपति का अभिभाषण

[अनुवाद]

महासचिव : मैं 17 जनवरी, 1985 को संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में राष्ट्रपति द्वारा दिए गए अभिभाषण की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

राष्ट्रपति का अभिभाषण

[हिन्दी]

माननीय सदस्यगण,

आठवीं संसद के प्रथम अधिवेशन में, मैं आप सबका हर्ष से स्वागत करता हूं। लोक सभा के नए सदस्यों का मैं अभिवादन करता हूं। मुझे विश्वास है राष्ट्र की प्रगति में वे अपना पूर्ण योगदान देंगे।

2. 1984 भारत के लिए संकट और परीक्षा का वर्ष रहा। लेकिन दुःख और संताप के बीच आशा थी, और साथ ही राष्ट्र ने जिन सिद्धांतों को अपनाया है और पालन किया है उनके प्रति दृढ़ आस्था भी थी।

3. 1984 के आरम्भ में पंजाब में विघटनकारी और राष्ट्र विरोधी तत्वों ने अपनी गतिविधियां तेज कीं। बातचीत की प्रक्रिया को सफल नहीं होने दिया गया। उग्रवादियों और आतंकवादियों की ओर से देश की एकता और अखण्डता को गंभीर खतरा उत्पन्न हुआ। नागरिक अधिकारियों की सहायता के लिए सेना बुलानी पड़ी। भारत की एकता और अखण्डता के खतरे का मुकाबला करने के लिए सरकार को सेना का मजबूर होकर उपयोग करना पड़ा। इसका सिलसिलेवार ब्यौरा 10 जुलाई, 1984 के श्वेत-पत्र में दिया गया है।

4. 31 अक्तूबर, 1984 को हमारी प्रिय नेता, प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की विश्वासघाती हत्या कर दी गई।

5. किन परिस्थितियों में हत्या की गई इनसे संबंधित तथ्यों की जांच के लिए जस्टिस एम० पी० ठक्कर की अध्यक्षता में एक जांच आयोग नियुक्त किया गया है।

प

6. इन्दिरा गांधी विश्व इतिहास के अमर व्यक्तियों की श्रेणी में आ गई हैं। उनकी जीवन-गाथा भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत है। उनके जीवन का हर पल, हर क्षण भारत की एकता को सुदृढ़ करने और सभी क्षेत्रों में देशवासियों को मजबूत बनाने के लिए समर्पित था। कोई भी स्मारक उनके व्यक्तित्व की भव्यता और प्रकाश को पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता। उनके प्रति हमारी सबसे अच्छी श्रद्धांजलि यही होगी कि उन्होंने अपने अन्तिम श्वास तक जिस मार्ग को आलोकित किया उस पर हम चलें।

7. इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली और देश के कुछ अन्य हिस्सों में गड़बड़ी और हिंसा से जान-माल का नुकसान हुआ। कम से कम समय में स्थिति पर काबू पाने के वास्ते सख्त और प्रभावी कदम उठाये गए। इस हिंसा के दौरान जिन परिवारों का नुकसान हुआ उनके प्रति मेरी सरकार की गहरी सहानुभूति है। प्रभावित लोगों के पुनर्वास का कार्य प्राथमिक है और केन्द्र तथा राज्य सरकारें इसे पूरा महत्व दे रही हैं।

8. भोपाल में गैस से पीड़ित परिवारों के प्रति सरकार की पूरी हमदर्दी है। जिन परिवारों में रोजगार का कोई साधन नहीं रहा उनके पुनर्वास पर ध्यान दिया जा रहा है। प्रभावित परिवारों को मुआवजा देने के लिए भी कार्यवाही की जा रही है। सरकार औद्योगिक संस्थानों के स्थान और बचाव उपायों की पूरी जांच कर रही है ताकि दोबारा ऐसी भयानक दुर्घटना न हो।

9. भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली की परिपक्वता और शक्ति कांग्रेस (ई) संसदीय दल के नये नेता के रूप में श्री राजीव गांधी के निर्विघ्न और व्यवस्थित चुनाव से प्रदर्शित हुई। लोक सभा के चुनाव अविलम्ब कराये गए। जिस निष्पक्षता और शांति से ये चुनाव हुए उसका श्रेय हमारे देशवासियों की लोकतांत्रिक प्रतिभा को जाता है।

10. 1984 के चुनाव भारतीय राष्ट्रीयता के पुनर्जीवन का प्रतीक है जो जात-पात, सम्प्रदाय और प्रदेश के सभी बंधनों से मुक्त वातावरण में हुए। शासक दल श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में जिस अभूतपूर्व बहुमत से विजयी हुआ उससे जाहिर है कि हमारे देशवासियों को राष्ट्र की एकता और अखण्डता की कितनी चिन्ता है और साथ ही इनको संजोये रखने के लिए केन्द्र में एक मजबूत और स्थायी सरकार बनाने की कितनी प्रबल इच्छा है।

11. यह स्पष्ट निर्णय उन आधारभूत नीतियों के पक्ष में भी है जिनसे हमारे देश को बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल काम करने के लिए शक्ति मिली है।

12. पिछले पांच वर्षों के दौरान अर्थ-व्यवस्था में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। छठी योजना की अवधि में औसत विकास दर 5.2 प्रतिशत के लक्ष्य तक पहुंचने की आशा है। अनाज का उत्पादन 1979-80 में 109.7 मिलियन टन से बढ़कर 1983-84 में 151.5 मिलियन टन हो गया जो इस वर्ष के लक्ष्य से 9.5 मिलियन टन अधिक था। चालू वर्ष में कृषि उत्पादन की गतिशीलता बने रहने की आशा है। हमारे किसानों और खेत मजदूरों के उद्यम और कड़ी मेहनत से उपलब्धियों का एक नया अध्याय शुरू हुआ है, जिस पर हम सब को गर्व है। कृषि उत्पादन में इस वृद्धि की महत्वपूर्ण विशेषता है देश के पूर्वी और मध्य क्षेत्रों में हरित क्रान्ति का फैलना।

13. छठी पंच वर्षीय योजना के दौरान औद्योगिक उत्पादन में भी 1983-84 तक लगभग 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस वर्ष के प्रथम 6 महीनों में विकास दर 7 प्रतिशत से अधिक रही है। इससे हमारी अर्थ-व्यवस्था को गति मिलेगी। परम्परागत रूप से श्रमिक वर्ग ने उत्पादन की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

14. छठी योजना की अवधि में बुनियादी उद्योगों के कार्यों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। 1983-84 के अन्त तक कोयले का उत्पादन 32.9 प्रतिशत और बिजली का उत्पादन 32.6 प्रतिशत बढ़ गया। कच्चे पैट्रोलियम के उत्पादन में 121 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उर्वरक और सीमेंट के उत्पादन में भी क्रमश: 52.3 प्रतिशत और 53.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। चालू वर्ष के दौरान इन क्षेत्रों में उत्पादन और अधिक बढ़ा है।

15. कीमतों की स्थिति में भी सुधार हुआ है। चालू वर्ष में दिसम्बर, 1984 के अन्त तक थोक मूल्य में 1983 की उसी अवधि में 7.7 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले 4.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। दिसम्बर, 1984 के अन्त तक मुद्रा फैलाव की वार्षिक दर दिसम्बर, 1983 के अन्त में 10.7 प्रतिशत के मुकाबले 5.4 प्रतिशत थी।

16. मांग और आपूर्ति दोनों के कुशल प्रबंध के कारण मुद्रा फैलाव के दबाव पर नियंत्रण रखने में सफलता मिली है। मुद्रा विस्तार की गति और सरकारी खर्च पर नियंत्रण रखने के प्रयास किये गये। आपूर्ति के मामले में आवश्यक वस्तुओं को सुलभ बनाने के कई उपाय किए गए। इस प्रक्रिया में वस्तुओं के लाभकारी दाम देने की सरकार की नीति के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई है। साथ ही मुख्य निवेशों की आपूर्ति, जरूरत पड़ने पर आवश्यक वस्तुओं का पर्याप्त मात्रा में आयात तथा अनाज का बफर स्टाक बनाने से भी इस दिशा में मदद मिली है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली ने कीमतों को स्थिर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

17. विदेशी ऋण की अदायगी की स्थिति में निरंतर सुधार हुआ है। आपको स्मरण होगा कि पिछले वर्ष सरकार ने आई. एम. एफ. के 5 बिलियन एस. डी. आर. ऋण में से 3.9 बिलियन प्राप्त करके शेष भाग को स्वेच्छा से छोड़ दिया था। राजकीय कोष की स्थिति अधिक मजबूत हुई है। विदेशी मुद्रा का भण्डार 1982-83 के अन्त में 4,265 करोड़ रुपये से बढ़कर 1983-84 के अन्त में 5,498 करोड़ रुपये हो गये हैं। यह दिसम्बर, 1984 के अन्त में बढ़कर 6,250 करोड़ रुपये हो गए। लेकिन यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें ढील देने की कोई गुंजाइश नहीं है।

18. 20 सूत्री कार्यक्रम के माध्यम से गरीबी कम करने के निरंतर प्रयास होते रहे। छठी पंच वर्षीय योजना के प्रथम चार वर्षों में समेकित ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के अन्तर्गत अनुसूचित जाति और जन जाति के 4.7 मिलियन परिवार और विभिन्न समुदायों के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के 7.9 मिलियन परिवार शामिल हुए। इसके साथ चालू वर्ष में नवम्बर, 1984 तक 19.45 लाख परिवारों के शामिल होने से इस कार्यक्रम में परिवारों की कुल संख्या 14.5 मिलयन हो गई है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना और ग्रामीण भूमिहीन गारण्टी योजना से गांव के गरीब तबके के लोगों के लिए रोजगार के अवसरों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। इन कार्यक्रमों को लागू करने में महिलाओं और अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों को लाभ पहुंचाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

19. ग्रामीण पेयजल आपूर्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत 2.31 लाख समस्याग्रस्त गांवों में से 1.52 लाख गांव 31 मार्च, 1984 तक शामिल हो गये थे। 1984-85 के दौरान करीब 42,000 अधिक गांव शामिल हो जायेंगे।

20. छठी योजना के दौरान 11.5 मिलियन हेक्टेयर की अतिरिक्त सिंचाई क्षमता पैदा करने की आशा है। छठी योजना के अन्त तक देश की कुल सिंचाई क्षमता लगभग 68 मिलयन हेक्टेयर हो जाने की आशा है जबकि देश की सम्पूर्ण सिंचाई क्षमता 113 मिलियन हेक्टेयर है। नर्मदा घाटी का बहुद्देशीय विकास हाथ में ले लिया गया है।

21. छठी योजना में अर्थ-व्यवस्था की बहुमुखी प्रगति यह सिद्ध करती है कि योजनाबद्ध विकास की हमारी नीति खरी है। सरकार अब सातवीं पंचवर्षीय योजना के ऊपर लगी है जो अप्रोच पेपर के अनुसार है। सातवीं योजना में इन्दिरा गांधी ने "भोजन, काम और उत्पादन" को प्राथमिकता दी है। देश को अब अनुशासित ढंग से और ज़ोरदार प्रयास से विकास की उस अवस्था में पहुंचाना है जिसमें तकनीकी प्रगति और सामाजिक न्याय के आदर्श एक दूसरे को शक्ति दें।

22. नई सरकार को जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा गांधी से एक सुसंगत और सिद्धान्तयुक्त विदेश नीति विरासत में मिली है। हमारी विदेश नीति संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों पर आधारित है, गुट-निरपेक्षता के प्रति समर्पित है और पुराने या नये उपनिवेशवाद तथा जातीय रंग-भेद की विरोधी है।

23. गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के अध्यक्ष के रूप में भारत ने अन्य देशों के साथ मिलकर विश्व में एक न्यायोचित व्यवस्था कायम करने, तनाव कम करने और सदस्य देशों के बीच झगड़े सुलझाने के प्रयास किए। आज सबसे ज्यादा ख़तरा है परमाणु युद्ध का। पिछले वर्ष अर्जेंटीना, ग्रीस, मेक्सिको, स्वीडन, तनजानिया और भारत के नेताओं ने मिल कर परमाणु हथियार बनाने वाले राष्ट्रों से अनुरोध किया कि वे परमाणु हथियारों पर पूर्ण प्रतिबंध लगायें और उनके भण्डार को कम करें। कुछ ही दिन बाद इन छः देशों के नेता दिल्ली में मिलेंगे और परमाणु युद्ध के खतरों को रोकने के लिए क्या कदम उठाये जा सकते हैं इस पर विचार करेंगे।

24. जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र अमरीका और सोवियत संघ के बीच वार्ता फिर आरम्भ हुई है इसका हम स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि निरस्त्रीकरण की दिशा में अर्थपूर्ण कदम उठाये जायेंगे।

25. सरकार अपने सभी पड़ोसी देशों से निकट के संबंध बनाने को अधिक महत्व देती है। दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग विकास के लिए हम उत्सुक हैं।

26. हिन्द महासागर में सैन्यीकरण जारी है इससे हमारे तटवर्ती इलाकों में तनाव और संघर्ष की सम्भावना बढ़ गई है। सरकार हिन्द महासागर को सैन्यीकरण से मुक्त रखने के ध्येय के प्रति वचनबद्ध है ताकि इस क्षेत्र में और उस तटवर्ती राष्ट्रों में तनाव दूर हो, जो मुख्यतः विकासशील देश हैं। और जो विकास के कार्यों में अपने साधन, ध्यान और शक्ति लगा सकते हैं।

27. पड़ोसी क्षेत्रों में आधुनिक हथियार दिया जाना हमारे लिए चिन्ता का विषय है। हम आशा करते हैं कि इसे रोकने के लिए सरकार ने जो पहल किया है, उसके अनुरूप पाकिस्तान सकारात्मक और रचनात्मक रवैया अपनायेगा।

28. श्रीलंका में जातीय हिंसा से हमें बहुत चिन्ता है। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि ताकत के जोर पर कोई हल नहीं निकाला जा सकता। एक राजनीतिक प्रक्रिया ही उचित समाधान निकाल सकती है जिसमें सभी संबंधित पक्ष शामिल हैं। श्रीलंका में ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जिससे भारी संख्या में भारत में आये शरणार्थी वापस जा सकें।

29. चीन के साथ हमारे संबंधों में सुधार हुआ है। हम अपनी सीमा के प्रश्न को हल करने का प्रयास करते रहेंगे।

30. सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों के साथ हमारे मैत्रीपूर्ण संबंधों और सहयोग में निरंतर प्रगति हो रही है।

31. संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और शिक्षा के क्षेत्रों में बढ़ते सहयोग का हम स्वागत करते हैं।

32. पश्चिम एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, प्रशान्त महासागर, पूर्व एशिया, अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप, मध्य तथा दक्षिण अमरीका और कैरीबियन के देशों के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंधों में निरन्तर वृद्धि हमें देखने को मिली है।

33. हम अफ्रीका के कुछ भागों में अभूतपूर्व सूखे और अकाल की स्थिति से दुःखी है। हमने 1 लाख टन गेहूं अकाल सहायता के लिए भेजा है और चिकित्सा सहायता भी प्रदान की है। संकट की इस घड़ी में विश्व के सभी देशों को अफ्रीकी देशों की सहायता करनी चाहिए।

34. मैं पिछले वर्ष अर्जेंटीना, मेक्सिको, मारिशस, येमन जनवादी गणराज्य और येमन अरब गणराज्य की राजकीय यात्रा पर गया था। भूतपूर्व प्रधान मंत्री सोवियत संघ, लिबिया और तुनिशिया की यात्रा पर गई थीं। भूटान नरेश, कतर के अमीर, श्रीलंका और यूगोस्लाविया के राष्ट्रपतियों, आस्ट्रिया के फैडरल चांसलर, चैकोस्लोवाकिया, जापान, न्यूजीलैण्ड और वनूआतू के प्रधान मंत्री विएतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव और बर्मा सोशलिस्ट प्रोग्राम पार्टी के अध्यक्ष हमारे देश के राजकीय अतिथि थे। इस आदान-प्रदान से भारत और उन देशों के बीच मैत्री संबंधों तथा सहयोग को आगे बढ़ाने में हमें मदद मिली है। श्रीमती इंदिरा गांधी की अन्त्येष्टी में 102 देशों के नेताओं ने भाग लिया और दुःख की घड़ी में अपनी जनता की ओर से संवेदना प्रकट की।

35. मैं अब भावी कार्यों की समीक्षा करूंगा। प्रधान मंत्री ने पंजाब और असम की समस्याओं का हल निकालने के लिए सरकार का दृढ़ निश्चय पहले ही स्पष्ट कर दिया है।

36. सरकार एक स्वच्छ सार्वजनिक जीवन के लिए वचनबद्ध है। वह चाहती है कि चुनावी सुधारों पर राजनीतिक दलों के साथ व्यापक रूप से विचार-विमर्श करने में पहल की जाए। इसमें सरकार उनके सहयोग का स्वागत करेगी।

37. एक स्वच्छ राजनीतिक व्यवस्था कायम रखने के उद्देश्य से सरकार दल-बदल रोक पर एक विधेयक संसद के इस सत्र में ला रही है।

38. सरकार, प्रशासनिक प्रणाली में सुधार की ओर पूरा ध्यान देगी जिससे यह अधिक कुशल बन सके तथा जनता की जरूरतों और आकांक्षाओं पर ध्यान दे सके।

39. वस्त्र उद्योग की स्थिति अच्छी नहीं है और इस समस्या पर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार इस उद्योग के लिए एक नई नीति बनायेगी और इसकी घोषणा करेगी।

40. शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किये जायेंगे तथा एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई जायेगी।

41. संविधान की गरिमा बनाये रखने तथा जनता के मूल अधिकारों की रक्षा करने में हमारी न्यायिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ मसले हैं जिन पर ध्यान दिया जाना है। समाज के कमजोर वर्गों को न्यायिक सहायता अधिक आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए। लोगों को शीघ्रतर न्याय मिलना चाहिए। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सरकार कदम उठायेगी।

42. महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास को सरकार प्राथमिकता देगी। बालिकाओं को उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षा निःशुल्क उपलब्ध कराना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। सरकार महिलाओं के लिए एक नया राष्ट्रीय कार्यक्रम बनायेगी। इस कार्यक्रम को बनाने और उसे लागू करने में स्वयंसेवी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

43. 1985 युवा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। राष्ट्रीय अखण्डता, समाज सेवा तथा मानव प्रयास से संबंधित हर क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त करने का प्रमाण हमारे युवक पहले ही दे चुके। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि युवक आगे आयें और राष्ट्र निर्माण के कार्य में उत्साह-पूर्वक भाग लें। इस संबंध में उचित कार्यक्रम लागू किया जायेगा।

44. देश के लिए, जंगलों को बचाने और उनका विकास करने के महत्व को ध्यान में रखते हुये सरकार ने वन तथा अन्य जीवन का एक पृथक विभाग बनाया है। एक नई वन नीति की शीघ्र घोषणा की जायेगी। एक वेस्टलैंड डेवेलपमेंट बोर्ड का गठन किया जा रहा है जिससे वनरोपण को एक जन आन्दोलन का रूप दिया जा सके। वायु तथा जल प्रदूषण की समस्या का समाधान करने के लिए भी कारगर कदम उठाये जा रहे हैं।

45. गंगा को दूषित होने से बचाने के लिए मेरी सरकार एक केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण स्थापित कर रही है। गंगा कोई साधारण नदी नहीं है। इसके साथ हमारे अतीत की स्मृतियां, हमारे गीत, काव्य और सत्य की खोज जुड़ी है। इसलिए एक स्वच्छ गंगा से लोगों को अपार संतोष होगा।

46. अपनी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के कार्य को सरकार बहुत महत्व देती है। इतना ही महत्व रचनात्मक कलाओं के विकास को भी दिया जायेगा। विज्ञान और टैक्नॉलोजी को प्रोत्साहन तथा लोगों की समस्याओं को वैज्ञानिक तरीके से सुलझाने को सरकार उच्च प्राथमिकता देती रहेगी।

47. ये हैं कुछ राष्ट्रीय प्रयास की प्राथमिकताएं। जनता के प्रतिनिधि होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है कि लोगों में जो उमड़ता हुआ उत्साह है उसे हम एक सहयोगी और अनुशासनमय प्रयास में बदलें जिससे विकास में गति आए और देश को 21वीं सदी के लिए तैयार कर सकें। इस महान और रोचक कार्य में सफलता के लिए मैं आपको शुभकामनायें देता हूं।

जय हिन्द ।

सदस्यों द्वारा शपथ-ग्रहण

12.34 म०प०

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : महासचिव उन सदस्यों के नाम पुकारे जिन्होंने अभी शपथ-ग्रहण नहीं की है या प्रतिज्ञान नहीं किया है।

श्री दिग्विजय सिंह (राजगढ़)

श्री आर० एन० यादव (परभणी)

श्रीमती केशरबाई क्षीरसागर (बीड़)

श्री माऊसाहेब थोराट (पोरबन्दर)

श्री के० प्रधानी (नौरंगपुर)

श्री गिरधारी लाल (बिजनौर)

श्री केदार नाथ सिंह (हापुड़)

निधन सम्बन्धी उल्लेख

12.35 म.प.

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब मैं निम्नलिखित संकल्प प्रस्तुत करता हूं :

"यह सभा बीसवीं सदी की एक महानतम भारतीय विभूति के निधन पर शोक प्रकट करती है। भावी पीढ़ियां, हमारे समय की उत्तेजना से ऊपर उठ कर इन्दिरा गांधी की उपलब्धियों के आयाम और उनकी मध्यता को प्रेम तथा आभार की दृष्टि से देखेंगी। उनकी दूरदृष्टि तथा अथक कार्यशक्ति से भारत ने आत्मनिर्भरता के युग में पदार्पण किया। उन्होंने संगठित आधुनिक भारत की संकल्पना में एक नया जीवन डाला। आज हम गर्व तथा विश्वास के साथ सिर ऊंचा करके चलते हैं, गर्व इस बात पर कि आज भारत क्या है और विश्वास इस बात का है कि हम अपने लिए तथा पूरे विश्व के लिए क्या कर सकते हैं।

इन्दिरा गांधी अकेले भारत की ही नहीं थी, वह समूची पीड़ित मानवता की थी। उनकी आवाज भूखे, निर्बल, विक्षुब्ध, अपंग तथा विकलांग वर्ग की आवाज़ थी। उन्होंने इस बात के लिए परिश्रम किया कि राष्ट्रों में पारस्परिक कटुता तथा कलह समाप्त हो तथा न्याय स्थापित हो। वह सभी प्रकार के उत्पीड़न के विरुद्ध निरंतर लड़ती रहीं। अपनी विशिष्ट लगन के साथ उन्होंने निरस्त्रीकरण तथा न्यायोचित अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का समर्थन किया।

भारत की जनता इन्दिरा गांधी की भक्त रही क्योंकि उनमें और उनके माध्यम से ही भारत के महान भविष्य के उनके सपनों और आशाओं ने ठोस रूप धारण किया। इसके बदले में उन्होंने अपने सपनों के भारत के विषय में जनता को अजेय शक्ति प्रदान की। इन्दिरा गांधी का भारत तथा भारत की जनता के प्रति जो अगाध स्नेह रहा वह युगों-युगों तक हमारे साथ रहेगा।

वह इतिहास की अमर विभूतियों में शामिल हो गई हैं। हम उनके प्रति विनीत श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके महान आदर्शों का अनुसरण करने का संकल्प लेते हैं।"

माननीय सदस्यगण, हम यहां इस सभा में इसके निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से भारत की स्वर्गीय प्रधान मंत्री भारत रत्न प्रियदर्शिनी श्रीमती इंदिरा गांधी को जिनकी उपस्थिति से यह सम्मानित सभा पिछले 15 वर्षों से आलोकित रहीं, अपने कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्र हुए हैं। उन्होंने हमारी संसदीय परम्पराओं और प्रक्रियाओं का पोषण किया और वह सदैव ही आमसहमति की हामी रही ताकि एक अखंड, मजबूत, आधुनिक भारत की छवि उभर कर सामने आए। उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं के कार्यकरण में न कभी हस्तक्षेप किया और न ही उनकी अनदेखी की। उनका दृष्टिकोण सदैव ही निष्पक्ष और व्यावहारिक होता था। उनकी दृष्टि में भारत और भारतवासी सर्वोपरि थे। वह भारतवासियों की इच्छाओं को आदेश मानती थीं। वह एक महान लोकतंत्रवादी थी। 1977 में उन्होंने लोगों के उस निर्णय के सामने, सहर्ष सिर झुकाया जिसे प्राप्त करने का निर्णय उन्होंने स्वयं लिया था। लेकिन जब वह पुनः सत्ता में आईं तो उन्होंने बदले की राजनीति नहीं अपनाई। अपने कट्टर विरोधियों के प्रति भी वह ऐसे कठोर शब्द प्रयोग नहीं करती थीं जो उन्हें उत्तेजित या नाराज करे। उन्हें तो सदैव इस देश के भविष्य की चिन्ता रहती थी।

1979 में एक शाम में मैं उनके साथ काश्मीर घाटी में था। उस दिन हम तीन-चार बैठकों में भाग लेकर आए थे और हम—मैं और श्रीमती इन्दिरा गांधी—लॉन में बैठे हुए थे। उस समय उनके विरुद्ध कुछ चल रहा था और मैंने उनसे पूछा, "महोदया, आपका क्या विचार है?" उन्होंने कहा, "ऐसा होता रहता है, हमें अपना काम करना है।" तब मैंने उनसे कहा "महोदया, मैं चाहूंगा कि आप कुछ करें, मुझसे एक वायदा कीजिए।" उन्होंने पूछा "क्या वायदा है?" मैंने कहा, "जब हम पुनः सत्ता में आएं तो हम किसी भी हालत में उनके पद्चिन्हों पर नहीं चलेंगे। चाहे जो भी परिस्थितियां हों, चाहे ऊंचे स्थानों पर विराजमान लोगों के कुछ भी कारनामें हों, और उन्होंने मुझे किस ढंग से उत्तर दिया। यह एक उत्तर नहीं था, यह प्रश्न के प्रति प्रश्न था। उन्होंने मुझसे पूछा, "आपने कभी मुझे किसी के प्रति कठोर शब्द बोलते हुए सुना है।" मैंने कहा, "नहीं महोदया।" उन्होंने आगे कहा, "तो विश्वास कीजिए यदि हम दोबारा सत्ता में आए तो मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगी जो व्यक्तिगत हो या जिसे बदले की भावना से प्रेरित कहा जा सके।" और मैं सोचता हूं कि उन्होंने अपना कहा पूरा किया। अपने कट्टर विरोधियों के प्रति भी उन्होंने कभी ऐसे कठोर शब्द प्रयोग नहीं किए जो उन्हें चिढ़ाएं या नाराज़ करें। उन्हें मुख्य चिन्ता देश के भविष्य की रहती थी। उनमें एक सच्चे राजनेता की दूरदृष्टि, कार्यशक्ति तथा साहस था तथा उन्होंने देश के हित को सर्वोपरि रखा। उनके लिए व्यक्ति तथा दल इतना महत्व नहीं रखते थे। उनका सबसे बड़ा उद्देश्य यह था कि भारत एक महान देश के रूप में उभरे, हम शांति के लिए समर्पित हों तथा हमारी सभी के साथ मैत्री हो।

इन्दिरा प्रियदर्शिनी को देश सेवा का प्रशिक्षण अपने दादा पंडित मोतीलाल नेहरू, पिता पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा माता श्रीमती कमला नेहरू के संरक्षण में बचपन से ही मिला था। समर्पण तथा बलिदान की भावना उन्हें विरासत में मिली थी और उसी आदर्श के लिए वह जियीं—

[हिन्दी]

और हो भी क्यों न? इस भारत देश में इतना कुछ है, हमारी धरोहर इतनी महान है। यहां पर महात्मा गांधी, पंडित नेहरू और उनसे पहले ऋषि, मुनि और महात्मा हुए। उनमें से किसने त्याग नहीं किया, किसकी भावना त्यागमय नहीं थी? एक लंगोटी वाला फकीर सारे संसार की सबसे बड़ी एम्पायर से लड़ गया और ऊंगली तक नहीं उठाई किसी के खिलाफ। और फिर त्याग की भावना सिखाई, सबसे बड़ा त्याग—अपना बलिदान—किया उन्होंने, ताकि देश एक रह सके और लोग इस ढंग से न सोचें कि कौन यह है और कौन वह है। सब भाई हैं। ऐसा कहा उन्होंने। और यही इन्दिरा जी ने किया। इंदिरा जी शक्तिशाली थीं। वह किसी को दुःख दे सकती थीं, लेकिन नहीं, उन्होंने खुद सहा, खुद गोली सही। यह उनकी महानता थी।

[अनुवाद]

समाज के निर्धन वर्गों तथा अल्पसंख्यकों को आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक न्याय दिलाने के लिए वह निरंतर अभियान चलाती रहीं। वह भारत को अखंड, मज़बूत, समृद्ध और सुन्दर बनाने के लिए कृत-संकल्प थीं। यही था उनका स्वप्न।

राष्ट्र की अनेक वर्षों तक सेवा करते हुए उनकी सरकार ने व्यवहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया और कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अविकसित अर्थ-व्यवस्था से ऊपर उठकर उसे ऐसी बचत वाली अर्थ-व्यवस्था तक पहुंचाया जिसमें देश स्वयं को पोषित कर सके तथा स्वावलम्बी बन सके। यह कितनी बड़ी उपलब्धि थी। विश्व में ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। भारत के किसानों ने उनकी प्रेरणा व स्वयं अपने बलबूते पर एक बेजोड़ कार्य कर दिखाया। 34 करोड़ जनसंख्या वाला देश लाखों टन अनाज विदेशों से आयात कर रहा था, अब हमारी आबादी 70 करोड़ से अधिक है और हम निर्यात करने

की स्थिति में हैं। या शान त उ विध है। आधुनिक तरीकों तथा किस्मों के आनुवंशिक विकास पर पर्याप्त बल देते हुए कृषि विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इसके साथ-साथ सरकारी क्षेत्र का विकास व निजी क्षेत्र में औद्योगिक विकास एक साथ हुए। कृषि क्षेत्र में और औद्योगिक क्षेत्र में हुई प्रगति से विकास प्रक्रिया तीव्रगति से आगे बढ़ी। अन्तरिक्ष के क्षेत्र में और एंटार्कटिका की खोज की दिशा में भारत ने अपना पहला कदम रखा। संचार के क्षेत्र में भी आधुनिकीकरण किया गया और राष्ट्रीय एकीकरण को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से "इन्सैट" सुविधाओं के प्रयोग पर बल दिया गया।

वह प्रत्येक भारतीय के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाना चाहती थीं। आधुनिकीकरण के लिए प्रयास करते हुए उन्होंने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत—इसकी सहज विविधता में एकता, इसके महान अतीत व परम्पराओं, इसकी ललित कलाओं, साहित्य संगीत, नृत्य व लोक-कलाओं, इसके हथकरघों, हस्तशिल्प तथा सारे देश में विद्यमान वास्तुकला तथा सुन्दरता—पर बल दिया।

वैज्ञानिक क्षेत्र में विकास के लिए उन्होंने व्यक्तिगत रूप से रुचि लेकर उसे गति प्रदान की। शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों को उन्होंने जो प्रोत्साहन दिया वह उनके लिए सदैव प्रेरणा-स्रोत का कार्य करता रहा। जब कभी वे असफल भी हो जाते थे तो भी वह उन्हें 'बार-बार प्रयत्न' करने की प्रेरणा देती थी ताकि अन्ततः लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस क्षेत्र में विकास के साथ-साथ वह इस बात के प्रति भी जागरूक थी कि पर्यावरण को संतुलित रखा जाए। वन्य जीवन में पशु-पक्षी विहारों में और देश की वनस्पति, जीवजन्तुओं आदि में उनकी जो रुचि थी वह सर्वविदित है। चाहे यह गैस की खोज थी, तेल की खुदाई, महासागरीय शोध, उपग्रह छोड़ना, एंटार्कटिका में वैज्ञानिकों को भेजना, पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने की आवश्यकता को उजागर करना या एशियाई खेलों द्वारा खेलों का विकास करना, उन्होंने इनमें विशेष रुचि लेने के लिए सदैव समय निकाला।

रक्षा के क्षेत्र में हमारी अभूतपूर्व प्रगति हुई और हमारे रक्षा पराक्रम और बलों के प्रति देशवासियों में गर्व की भावना जागृत हुई। विघटनकारी ताकतों से राष्ट्र को होने वाले खतरों के प्रति वह पूरी तरह सजग थीं और भारत को शक्तिशाली बनाने के लिये उन्होंने लगातार कार्य किया। वस्तुतः में, उनके रक्त की एक एक बूंद से राष्ट्र को सदा बल मिलेगा और उसकी एकता और मजबूत होगी। यही उनकी अपनी अभिलाषा भी थी।

भारत का विश्व शक्ति के रूप में उभर कर आना श्रीमती इन्दिरा गांधी की राजनैतिक कुशलता, उनकी सूझ-बूझ, उनके विचारों और उनके गहन ज्ञान का ही परिणाम है। प्राथमिकताओं की उनकी धारणा को विश्वभर में समर्थन मिलता था। गुट-निरपेक्ष आन्दोलन तथा राष्ट्रमंडल के अध्यक्षों के सम्मेलन की नेता के रूप में, वह विश्व के नेताओं से सम्पर्क बनाये रखती थीं और इस भावना को जीवित रखने के लिये विदेशों के दौरे भी किया करती थीं। मरणोपरान्त उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिये 1984 का जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार प्रदान किया गया है। उनके निधन से, हमने न केवल विश्व का एक महान नेता खो दिया है, बल्कि हमने अपने इतिहास का एक अंश, भारत का एक अंश, अपना एक अंश, हर घर का एक अंश खो दिया है। उनके निधन से हमारे हृदय विदीर्ण हो गए हैं, हमारी आत्मा व्यथित है और हम एक खोखलापन महसूस कर रहे हैं।

"किन्तु, आह, अदृश्य हाथ का स्पर्श और अदृश्य आत्मा की आवाज आज भी अनुभूत और गुंजायमान है।"

वह अपने ही हाथों से लिखा अपना एक संदेश छोड़ गई हैं जिसे मैं उद्धरित करता हूं :–

"भारत के बेटे और बेटियों––चाहे आप कर्मचारी हो या किसान, व्यापारी हो या उद्योगपति, शिक्षक हो अथवा छात्र, लेखक हो या कलाकार, आप सभी इस महान् देश के निवासी हैं। आपकी रगों में नायकों और महान व्यक्तियों का रक्त बह रहा है। भेद को विश्वास में बदल डालो; निराशा को आशा में बदल डालो। तभी हम एक शक्तिशाली राष्ट्र बना पायेंगे; तभी हम भारत को एक सुन्दर ढांचे में ढाल सकेंगे। हम ऐसा करने में समर्थ हैं। हमने साहसपूर्ण कदम बढ़ाया है। हर प्रकार की कठिनाई का हम साहस और दृढ़ता से मुकाबला करेंगे।"

ऐसी थीं इन्दिरा गांधी। ऐसी है उनकी जनता।

हम सभी को ऐसा प्रतीत होता है कि उनके न रहने से हम सब की व्यक्तिगत हानि हुई है और हमारी आत्मा व्यथित है।

अपने पीछे, अपनी याद के रूप में वह कलियों सी कोमलता और हीरे की दीप्ति छोड़ गई हैं। अपने पीछे वह छोड़ गई है शोक संतप्त पुत्र––हमारे नये प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी को जिन पर––उत्तरदायित्व आ पड़ा है, एक ऐसा उत्तरदायित्व, जिसमें पीड़ित राष्ट्र का प्यार और विश्वास उमड़ता है, जो हतोत्साह और उदास है किन्तु जो अब भी सुदृढ़, संयुक्त और अपने सपनों और आकांक्षाओं को साकार करने के लिये उत्कंठित है।

प्रधान मंत्री जी आपकी क्षति हमारी क्षति है और पूरी सभा की ओर से तथा अपनी ओर से, मैं आपको तथा आपके परिवार को अपनी दिली संवेदना और सहानुभूति प्रकट करता हूं।

श्री सी. माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : अध्यक्ष महोदय, अपने समय की महान नेता के सम्मान में मैं नमन करता हूं। उनकी हत्या उनके ही घर में उनके ही अंगरक्षकों द्वारा की गई। यह महान राष्ट्रीय क्षति और महान आपदा थी और हमें इस बात की वास्तव में शर्मिन्दगी है कि उनके ही घर में हम लोग उनकी रक्षा नहीं कर सके।

महोदय अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से मैं अपना गहन दुःख प्रकट करता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले।

महोदय, मैं जानता हूं कि एक समय ऐसा था जब उनके काम करने का ढंग ऐसा रहा कि लोगों के हृदय में उनके पक्ष और विरोध में तीव्र भावनायें उमड़ी थी फलस्वरूप कुछ राजनैतिक समस्याएं पैदा हो गई थीं। किन्तु इस बात से कोई भी असहमत न होगा कि वह एक महान देश भक्त थीं और उन्होंने जो कुछ भी किया वह देश और जनता के हित में किया।

राजनैतिक हत्यायें–चाहे किसी की भी हों और किसी भी देश में हों बहुत बुरी और बहुत दुःखद घटनाएं होती हैं। हमें ज्ञात है कि बंगला देश में भी ऐसी एक दुःखद घटना घटी थी। किन्तु इस हत्या से हम एक ऐसे महानतम प्रधान मंत्री से वंचित हो गये हैं जो संसार में बिरले ही पैदा होते हैं और उन्हें खोकर हम सभी दुःखी हैं।

मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं था क्योंकि जब वह प्रधान मंत्री थीं तब मैं यहां नहीं था। मैं उनके महान पिता, और उनके महान पति श्री फिरोज गांधी को जानता था। मैं इन दो निर्भीक व्यक्तियों से परिचित था। श्रीमती इन्दिरा गांधी एक महान सांसद और विश्व की महानतम नेता के रूप में उभर कर आईं। वास्तव में हमें इस बात का गर्व है कि हमारी एक ऐसी महान नेता थीं तथा बाकी पीढ़ियां उन्हें सदा याद करेंगी। मेरा हमेशा यह विचार रहा है कि ऐसे महान

नेता कभीकभार ही पैदा होते हैं। हमारे देश के लिए और हम सभी के लिए भारी क्षति है। स्वर्गीय प्रधान मंत्री के दुःखद निधन के प्रति मैं एक बार पुनः अपनी गहन संवेदना प्रकट करता हूं।

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : अध्यक्ष महोदय, इन्दिरा जी की उपलब्धियों और योगदान की चंद शब्दों में ब्यान करना मुश्किल है। उनका योगदान केवल भारत तक ही सीमित नहीं था। वह विश्व भर के वंचित तथा गरीब व्यक्तियों के लिये संघर्ष करती रहीं। उनकी हत्या से हमने एक ऐसे राजनैतिक को खो दिया है जो हर युग में पैदा नहीं होते।

उन्हें न केवल, भारत में अपितु सारे विश्व में स्मरण किया जाता रहेगा। यदि उनके किसी एक गुण का उल्लेख किया जाये तो वह गुण है जो वह ठीक समझती थीं उसे पूरा करने और विश्व के गरीब तथा वंचित लोगों के उत्थान के लिये, जो करना जरूरी है उसे करने का उनका साहस और उनकी शक्ति। इस काम में उन्होंने जो साहस और शक्ति प्रदिशत की वह साहस और शक्ति बहुत कम लोगों में पाई जाती है चाहे वह सत्ता में रही हों या सत्ता से बाहर, उन्होंने इस संघर्ष को जारी रखा। अपनी विपत्तियों के समय में भी उन्होंने यह संघर्ष जारी रखा। विश्व भर के वंचित और गरीब लोगों के लिये किये गये इस संघर्ष के कारण उन्हें उन विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा जिसमें से संसार का कोई नेता शायद ही गुजरा हो, इसके लिये उन्हें न केवल अपने देश के भीतर के अपितु समस्त विश्व के दबावों का मुकाबला करना पड़ा। सम्भवतः इन्दिरा जी यह पसंद न करतीं कि हम लोग उनके लिये शोक प्रगट करें। उनकी स्मृति को बरकरार रखने के लिये हमें उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिये और उनके आदर्शों पर अमल करना चाहिये। हमारी ओर से यही उनकी सबसे अच्छी यादगार होगी।

धन्यवाद।

डा. सरदीश राय (बोलपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या पर गहरा दुख प्रकट करता हूँ। पिछले अधिवेशन के समाप्त होने पर जब हम लोग जुदा हुए थे तो हम यह सोच भी नहीं सकते थे कि नई लोकसभा की बैठक में वह नहीं होंगी, उनका जीवन उनके ही आवासीय परिसर में उनके ही दो सुरक्षा कर्मियों द्वारा इस तरह के कायरतापूर्ण ढंग से समाप्त कर दिया जायेगा।

श्रीमती इन्दिरा गांधी 1978-80 के संक्षिप्त अन्तराल को छोड़कर 1966 से देश की प्रधान मंत्री रहीं।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं हिस्सा लेने वाली, श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की साम्राज्यवाद विरोधी परम्पराओं का अनुसरण उस समय किया जब उन्होंने सोवियत संघ तथा समाजवादी देशों के साथ गुट-निरपेक्षता, मित्रता तथा सहयोग की विदेश नीति अपनाई। उन्होंने गुट-निरपेक्ष आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई तथा अपनी मृत्यु के वक्त वह इसकी अध्यक्षा थीं। वे आणविक युद्ध के खतरे से चिंतित थीं तथा आणविक निरस्त्रीकरण के विषय में छह देशों की अपील पर हस्ताक्षर करने वालों में एक थीं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या से सबसे अधिक इस बात का रहस्योद्घाटन होता है कि देश को अस्थिर करने और अगर सम्भव हो तो उसे तोड़ने का यह साम्राज्यवादी षड़यन्त्र था। जैसा कि हम जानते हैं यह अमरीकी साम्राज्यवाद का घोषित उद्देश्य है। हम जानते हैं कि साम्राज्यवादी

एजेन्सियां देश के विभिन्न भागों में विघटनकारी तथा अलगाववादी ताकतों को संरक्षण तथा सहायता दे रही हैं। हम जानते हैं कि खालिस्तान के अलगाववादियों को साम्राज्यवादियों द्वारा पाकिस्तान के सैनिक शासन के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा रहा है और हम जानते हैं कि साम्राज्यवादी शत्रुतापूर्ण शासकों को प्रतिस्थापित करके भारत को घेर रहे हैं। और हाल ही में हमें यह मालूम हुआ है कि अमरीका के विदेश विभाग ने यह अध्ययन करने का निर्देश दिया है कि अगर श्रीमती इन्दिरा गांधी की अचानक मृत्यु हो जाती है तो उस हालत में भारत में क्या होगा। उनकी हत्या में विदेशी हाथ का होना एकदम स्पष्ट है।

भारत के विरुद्ध साम्राज्यवादी षड़यंत्र काफी समय से चल रहा है। साम्राज्यवादी भारत पर अपनी तटस्थता की विदेश नीति और सोवियत संघ और समाजवादी देशों के साथ मित्रता की नीति को तिलांजलि देने के लिये बराबर दबाव डालते रहे हैं। इस नीति से भारत साम्राज्यवादी दबाव का मुकाबला करने में समर्थ रहा है और हमारा दल इसका समर्थन करता रहा है। आज भारत गुट निरपेक्ष आन्दोलन का अध्यक्ष है और हमें आशा है कि यह विदेश नीति देश के हित में, विश्व शांति के हित में तथा तीसरी दुनियां के हितों के लिये जारी रहेगी। हमारी राय में, यह श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति को बनाये रखने का सबसे अच्छा तरीका होगा।

[हिन्दी]

रक्षा मंत्री (श्री पी. वी. नरसिंह राव) : अध्यक्ष महोदय, कभी-कभी भावनाओं के अतिरेक में कुछ ठीक-ठीक बोला नहीं जाता, विचार कुछ उलझ जाते हैं। इस प्रस्ताव पर बोलते हुए मेरी कुछ ऐसी ही स्थिति हो रही है। पच्चीस बरस का लंबा साहचर्य, जिसके दौरान में हमने बहुत कुछ ऊंच-नीच देखे, धूप और छांव की आंख मिचौनी जैसे चलती रही, बहुत कुछ उनसे सीखा, वह सब आज मेरी आंखों के सामने कुछ झलक जाता है। उनकी उपलब्धियां बहुत थीं जिन्हें इतिहासकार लम्बे समय तक लिखते रहेंगे, लेकिन मुझे याद आती है मुसीबत, मुसीबत का समय और वे घड़ियां जो शायद किसी इतिहास में जगह नहीं पा सकेंगी, क्योंकि वह कुछ ही लोगों को मालूम है। बेलछी की उनकी यात्रा, जेल यात्रा, फिर ऐसे समय जब सत्ता से बाहर रहने के बावजूद जहां-जहां लोगों पर मुसीबत आई, उन्होंने वहां की दौड़ लगाई, उनसे मिलीं, उनसे अपनी सहानुभूति व्यक्त की और यह दिखाया कि उन्होंने लोगों से कुछ ऐसी समरसता प्राप्त कर ली थी कि वे उनसे जुदा नहीं रह सकतीं।

1.00 बजे

मुझे अवनीगड्डा, आन्ध्र प्रदेश का वह साहिली इलाका याद है जहां तूफान-जदा लोगों से मिलने वह गई थीं और उनके साथ हम थे। उनको अपने बीच देखकर लोगों की आंखों में आंसू की लड़ी लग गई। उन्होंने उनके आंसू पोंछे तब लोगों ने कहा कि हम जानते हैं कि आपके हाथ में इक्तदार नहीं है, आप हमारी मदद नहीं कर सकतीं, लेकिन आपने वहां से यहां आने का जो कष्ट किया है, हम उसे कभी नहीं भूल सकते। उन्हें तिहाड़ जेल में भेजने से पहले इस सदन का वह दृश्य मुझे याद है, मुझे शाह कमीशन के सामने उनको ले जाये जाने का दृश्य भी याद है और ऐसे कई दूसरे दृश्य याद हैं और मुझे लगता है कि इस देश को ऐसा नेतृत्व, जो लोगों से इतना समरस हो चुका था, उस समय मिला जब कि ऐसे नेतृत्व की बड़ी आवश्यकता थी। उन्होंने गरीबी को केवल निर्धनता के रूप में या वैयक्तिक निर्धनता के रूप में नहीं देखा, बल्कि राष्ट्रीय प्रगति के रास्ते में एक बहुत बड़ी रुकावट के रूप में देखा और उसी प्रकार वे जूझती रहीं। निर्धनता के जो-जो अंग हैं, गरीबी के जो-जो अंग हैं, इन्ग्रेडियैंट्स हैं, वे उनसे जूझती रहीं। केवल भाषण के लिए ही उन्होंने

गरीबी हटाने का नारा नहीं उठाया, बल्कि यह उनका दृष्टिकोण था। उस दृष्टिकोण को उन्होंने कांग्रेस के माध्यम से, सरकार के माध्यम से और सरकार के कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यान्वित कराने की कोशिश की। उन्होंने कई बार कहा कि मैं तो यहां से आदेश देती हूँ, मुझे नहीं पता कि वहां गांव में क्या होता है। अगर गांव में कुछ नहीं होता है तो कसूर किसी और का था, लेकिन उन्हें इस बात का भान था, इस बात को वे अच्छी तरह जानती थीं कि यही कार्यक्रम है जिससे गरीबी को हटाया जा सकता है। ऐसा नहीं जैसे किसी चीज़ को उठाकर फेंक दिया जाए लेकिन जैसे गरीबी हमारे समाज में सरायत कर गई थी, घर कर गई थी, उसको यहां से कैसे हटाया जाए, उसको कैसे दूर किया जाए, इस प्रकार के उनके विचार थे और उन विचारों ने इस देश में एक हलचल उत्पन्न कर दी। एक ऐसी खलबली मचा दी जिससे कोई अछूता रहीं रह सका, जिसमें कन्ट्रोवर्सी भी बढ़ी, उन पर आरोप भी हुए, उनकी आलोचना भी हुई, लेकिन ऐसे तूफान से हम आगे गुजरते गये और देश तरक्की करता गया।

उनका जीवन स्वयं परिपूर्ण था। ख्याति के उच्चतम शिखर पर वह पहुंच चुकी थीं। कोई भी राष्ट्र नेता या विश्व नेता इससे अधिक और कोई अच्छा नहीं कर सकता था, लेकिन हमारा दुर्भाग्य था कि इतना सब होने के बाद उनको गोली खाकर मरना पड़ा। यह देश का दुर्भाग्य था, लेकिन आज हम तो इतना ही कह सकते हैं, भारत इतना बड़ा देश है, इतना महान देश है, इतना जटिल देश है कि इसका रास्ता कभी सुगम नहीं रहेगा, भारत को कोई चैन की नींद नहीं सोने देगा, न बाहर वाला विरोधी न भीतर वाला। ऐसी कई शक्तियां हैं जिसके कारण भारत को तलवार की धार पर चलते रहना पड़ेगा। क्षुरस्य धारा इसको कहते हैं, इससे कोई बचाव नहीं है।

यही हमारा, इस देश का, देशवासियों का कर्त्तव्य होगा, जिनके कन्धों पर इसे चलाने की आज जिम्मेदारी पड़ी है, इतिहास ने ला दी है, उनका यही कर्त्तव्य होगा।

मैं आशा करता हूँ कि हम सब नये नेतृत्व को उसी प्रकार का योगदान देते रहेंगे, सहयोग देते रहेंगे जैसा कि हमने इंदिरा जी को दिया था। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपके इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ।

[अनुवाद]

श्री पी. कोलनदाईवेलु (गोबिचेट्टिपालयम): महोदय, यह न केवल भारत के लिये बल्कि विश्व भर के लिये और विशेषकर गुट-निरपेक्ष देशों के लिये ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती। मेरी स्मृति में इतना नृशंस, मनहूस, क्रूर और आतंकित कर देने वाला वर्ष कभी नहीं आया। 1984 का वर्ष एक हत्याओं का वर्ष रहा है।

श्री आबू अब्राहम ने कहा है, "काल ने दो युवकों की आत्माओं में अपने दो दूतों को प्रवेश कराया और उन्होंने एक दुबली पतली महिला, 66 वर्षीय दादी को उस समय गोली से उड़ा दिया जब वह अपने घर के बगीचे से गुजर रही थी।" महोदय, वह न सिर्फ राष्ट्र की मां हैं वह अपने पोते-पोतियों की दादी-मां भी हैं। हमने एक साहसी महिला को खो दिया है, हमने एक साहसी नेता खो दिया है, विश्व के तमाम नेताओं में सबसे अधिक साहसी नेता खो दिया है। यद्यपि उनकी काया दुबली पतली थी परन्तु उनकी आत्मा अजेय थी। ऐसी महिला को हमने खो दिया है।

इस संदर्भ में मैं हमारी अम्मा, श्रीमती इन्दिरा जी द्वारा की गई उन सेवाओं का उल्लेख करूंगा जो उन्होंने हमारे बीमार नेता श्री पुरातत्वी तलाइवर एम. जी. रामचन्द्रन के लिये की जब

वे मद्रास में एक प्राइवेट अस्पताल में थे। वे तुरन्त हवाई जहाज से मद्रास पहुँची। उन्होंने एक मित्र की तरह, एक मां की भांति सभी प्रकार की सहायता एवं सेवा की। हम, तमिलनाडु के लोग, अखिल भारतीय अन्ना डी. एम. के. के लोग हमारे राज्य के लिये की गई सेवाओं को कभी नहीं भूलेंगे। महोदय, मैं कहना चाहूँगा कि मां इन्दिरा गांधी की अपनी योजनाओं एवं कार्यक्रमों की वजह से भारत के निर्धन एवं दलित लोगों के दिलों में जीवित हैं। यद्यपि वह आज नहीं रहीं हैं, वह हमारे दिलो-दिमाग में बसी हुई हैं और हम श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट करते हैं।

युवा पीढ़ी के नेता, महान मां के सुपुत्र, प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने युवा वर्ग को सभी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ने के लिये, खासतौर से भारत में, बागडोर सम्भाली है। उनके भाषणों से, जो मैंने सुने हैं, निश्चित रूप में यही दृष्टिकोण उभरता है।

इन्दिरा गांधी जी ने बहुत सी योजनाएं तैयार की और उन्हें भारत में क्रियान्वित किया। हमारे सम्मानीय प्रधान मंत्री जी उन्हें जारी रखेंगे और देश को समृद्ध बनाने के लिये नई योजनाएं बनाएंगे।

अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम की ओर से मैं गहरी संवेदना प्रकट करता हूँ धन्यवाद !

[हिन्दी]

श्रीमती मोहसिना किदवई (मेरठ) : मेरी समझ में नहीं आता है कि मैं किन अल्फ़ाज़ में इन्दिरा जी को सिराज़े अकीदत पेश करूं। यह मेरी खुश किस्मती है कि मुझे उनके साथ रहने का मौका मिला और उन चन्द सालों में मैंने देखा है कि उनमें, एक अच्छे इन्सान में जो खुसुसियात होनी चाहिये वह सब इन्दिरा जी में मौजूद थीं। इस देश और देशवासियों के प्रति मैं समझती हूं कि जैसे एक मां अपने बच्चे को फलता-फूलता देखते खुश होती है, एक मां अपने बच्चे की परेशानी में, छोटी सी परेशानी में जिस तरह से चिंतित होती है और एक मां जब अपनी औलाद के ऊपर कोई मुसीबत होती देखती है तो वह किस बहादुरी और किस दृढ़ता के साथ उसका मुकाबला करती है, अपने बच्चे को बचाने के लिये, बिल्कुल ऐसी भावना मैंने इस देश के प्रति इन्दिरा जी में देखी।

इन्दिरा जी परेशानियों और मुसीबतों में खतरे का जिस बहादुरी और हिम्मत से सामना करती थीं और हम लोगों को बतातीं थीं, उस बारे में मुझे बहुत से ऐसे वाकयात याद आ रहे हैं कि जो 1978-79 तक मैंने उनके साथ रह कर देखे। कभी कोई परेशानी हम लोगों में आई तो हमसे हमदर्दी का इज़हार नहीं किया, बल्कि यह कहा कि बहादुरी और हिम्मत के साथ इन तमाम चीजों का मुकाबला कीजिए। यह उनके अलफ़ाज़ हुआ करते थे। मैंने देखा कि जितनी परेशान और मुसीबत ज़दा लोगों के लिये इन्दिरा जी की जो हमदर्दी होती थी, उसके वाकयात मुझे याद आ रहे हैं। सारी-सारी रात हम लोगों ने गाड़ियों में सफर किया है, सारी-सारी रात सेलाब से, खुश्क-साली से मुतासिरा लोगों के बीच में गई और मैंने वह नज़ारा भी देखा है कि चाहे रात के दो बजे हों, तीन बजे हों, जहां कहीं भी इन्दिरा जी पहुँची हैं, रात से लोग लालटेनें और टार्च लेकर पहुँचे हैं। ऐसा लगता था कि जैसे कोई देवी उनके जख्मों पर मरहम रखने के लिये उतरी हो।

अध्यक्ष महोदय, आप उस ज़माने में हम लोगों के साथी थे। मैं कहां तक उनके बारे में कहूं। मुझे वह वाकयात याद आता है जब वह दोबारा प्राइम मिनिस्टर बनीं। सबसे बड़ी खूबी इन्दिरा जी की जो थी, वह यह थी कि उन्होंने कभी अपने मुखालफीन के खिलाफ़ न तो एक लफ्ज़ कहा और न सुनना पसन्द किया। उनकी सबसे बड़ी खूबी हिम्मत, बहादुरी और सच्चाई थी।

मैं समझती हूँ कि उन्होंने कभी अपने ज़मीर पर बोझ नहीं डाला। जो उन्होंने दिलो-दिमाग में महसूस किया कि यह सही रास्ता है, वही रास्ता चुना। एक बंगाली का गाना है "एकला चलो रे"। उनका कहना था कि अगर सही और सच्चे रास्ते पर अकेले चलना है तो अकेले चलो, लेकिन उस भीड़ का कोई फायदा नहीं है जो सच्चे रास्ते को गलत रास्ते पर डालती है।

एक दफा हमीदा नामक एक लड़की ने मुझे पत्र लिखा जो कि गरीब से गरीब तबके की लड़की थी और हाई की पेशेंट थी। उसने मुझ से पैसे की मदद मांगी थी। मैंने उससे कहा कि इन्दिरा जी को पत्र लिखो। तीन दिन भी नहीं गुजरे थे, जसलोक अस्पताल में उसका सारा इंतजाम हो गया और ऑपरेशन सक्सैफुल हो गया।

परेशानी और मुसीबतों के साथ इंदिरा जी का दिमाग जितनी तेजी से काम करता था और हर खतरे से उन्होंने देश को जिस खूबी से निकाल कर आगे रखा, मुझे तो ऐसा लगता है :

चला जाता हूं हंसता खेलता मौजे हवा दस से
अगर आसानियां हों तो जिन्दगी दुश्वार हो जाए।

मुझे अच्छी तरह से याद है वह जमाना कि जब उन के ऊपर परेशानियां थीं, दिक्कतें थीं, लेकिन उन्होंने कभी सब्र का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। अगर हम लोग कभी गुस्सा भी होते थे तो वह यही कहती थीं कि नहीं, यह तरीका नहीं है, अपनी सच्चाई के साथ उस रास्ते पर चलो, मंजिल वहीं मिलेगी। इंदिरा जी, मुझे लगता है कि जैसे वह पुरानी तहजीब और नयी तहजीब का एक हसीन संगम थीं, पुरानी कद्रों और नयी कद्रों का एक हसीन इम्तजाज थीं। जितनी उनको पुरानी कद्रें और वह कल्चर अजीज थीं उतनी ही नयी टेकनीक्स और नयी चीजें जो देश को आगे बढ़ाने में मुआहिल थीं, वह उन को मंजूर थीं।

एक बात और मैं उन के लिए कहूंगी। मैं तो आपका एक जाती नुक्सान समझती हूं और मैं तो इसी पर फख्र करती थी कि शायद हमी कुछ लोगों को इंदिरा जी के साथ रहने का मौका मिला और हमीं उन्हें जाती तरीके से अच्छी तरह से जानती हैं, लेकिन उनकी मौत के बाद हमें ऐसा एहसास हुआ कि हमें ही वह फख्र हासिल नहीं था बल्कि न सिर्फ इस मुल्क के बल्कि दूसरी दुनिया के भी न जाने हजारों लोग थे जिनका उनसे परसनल नाता था, जाती उन का वास्ता था। यह शख्सियत एक ऐसी दिलावर शख्सियत थी कि जिस की जगह की पूर्ति होना मुश्किल है। एक मां की हैसियत से, एक सियासी शख्सियत की हैसियत से, एक अच्छे इंसान की हैसियत से, एक सच्चे हुब्बेलवतन की हैसियत से वह बहादुरी और हिम्मत का हौसला जो उन्होंने हमें दिखाया, उसी पर हम चलें, यही सच्चा खिराजें यकीदत होगा। मेरे लिए वह एक वजीरे आजम की हैसियत से थीं जब मैं यहां आई थी, लेकिन मैंने उनको हमेशा एक बड़ी बहन के नाते माना और जिस तरह से उन का वर्ताव हम सब के साथ था, मैं समझती हूं कि वह वजीरे आजम नहीं, बल्कि उन्हें जो भारत रत्न का खिताब मिला था, सचमुच वह हिन्दुस्तान की एक रत्न थीं, जो हमसे बेदर्दी के साथ छीन ली गई। मैं समझती हूं कि जो हमारे नौजवान प्रधान मंत्री नयी नस्ल के हैं, उन में भी वह सारी खसूसियत हैं। वह उस मां के बेटे हैं, उन की रगों में भी वही खून है और हम सब को यह उम्मीदें हैं कि जो उन के अधूरे काम हैं, वे पूरे होंगे। जहां तक इंदिरा जी का ताल्लुक है, जहां तक इंदिरा जी की जगह है, मैं समझती हूं उन के लिए यही चीज लागू होती है :

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा॥

[अनुवाद]

प्रो. मधु दण्डवते (राजापुर): अध्यक्ष महोदय, जब आपने शोक प्रस्ताव रखा तो वास्तव में आपने इस समूची सभा तथा समूचे राष्ट्र के दुःख को अभिव्यक्त किया। हमारे लोकतंत्र में राष्ट्र ने इन्दिरा जी को प्रधान मंत्री पद तथा ऊंचा स्थान देने का फैसला किया परन्तु इतिहास ने उन्हें और ऊंचा स्थान, एक शहीद का स्थान दिया है और वही स्थान अब इतिहास में उनका है। मैं उन व्यक्तियों में से हूं जिन्हें तेरह वर्ष के लम्बे अर्सों में विभिन्न विषयों पर भूतपूर्व प्रधान मंत्री जी के साथ चर्चा करने, तर्कों का आदान-प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, परन्तु तर्क सिर्फ तर्कों तक ही सीमित रहे, कभी भी कोई कड़वाहट नहीं आई, परन्तु विभिन्न मुद्दों पर हम में से जिनका इन्दिरा जी के दृष्टिकोण से मतभेद रहा। वे भी देश के हितों के विषय में उनके साथ रहे, जिस तरह इस देश की महान विभूति का अन्त कर दिया गया उससे हम सब को गहरा आघात पहुंचा है।

इन्दिरा जी के बारे में यह बात इतिहास में सदैव याद रहेगी कि उन्होंने सर्वोच्च हितों के लिए और भारी जोखिम पर इतिहास को नया मोड़ दिया। उनकी अदम्य इच्छाशक्ति और किसी भी खतरे का सामना करने के लिए तैयार रहने का संकल्प हम सब के लिए एक उदाहरण है। यदि हम अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते हैं तो हमें उनके इस गुण को ग्रहण करना होगा। उनके राजनीतिक जीवन की सम्पूर्ण गाथा उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सोच समझकर जोखिम उठाने की कहानी है जिसे वह हासिल करना चाहती थीं।

मुझे राष्ट्रपति का वह चुनाव याद है जब श्री गिरि निर्वाचित हुए थे।

मेरे विचार से उन्होंने अपने समूचे राजनैतिक जीवन को जोखिम में डाल दिया। इसका परिणाम यदि भिन्न होता तो उनका समूचा राजनैतिक जीवन बदल गया होता। लेकिन उन्होंने जानबूझकर खतरा मोल लिया। अपने ही दल में जब वह संगठन के विरुद्ध विद्रोह करना चाहती थीं तो उन्होंने बड़ा खतरा उठा कर वह काम किया। महोदय, जब उन्होंने राजनीति में आमूल परिवर्तन करना चाहा, तो वह देश में बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने में नहीं हिचकिचाई। महोदय, जब उन्होंने देखा कि राजा-महाराजा देश पर अपना अनुचित दबाव डालना चाहते हैं तो उन्होंने राजाओं का राजभत्ता समाप्त करने में हिचकिचाहट नहीं की और महोदय, जब बंगला देश का प्रश्न सामने आया, जब विश्व की महाशक्तियां दबाव डाल रही थीं, तब उन्होंने उन दबावों का विरोध किया और बंगला देश के स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन करने का सही निर्णय लिया। और महोदय, ऐसे कई मौकों पर हम ऐसी बातों की याद कर सकते हैं। वह हर बाधा को हटाने के लिए तैयार थीं। कुछ आपसी मतभेद भी हो सकते हैं। लेकिन यदि उन्होंने यह महसूस किया कि संविधान किसी कार्य में बाधक है तो उन्होंने संविधान में संशोधन करने में भी हिचकिचाहट नहीं की। वह जानबूझ कर खतरा मोल लेना चाहती थीं।

महोदय, आपात काल की स्थिति समाप्त हो चुकी थी और जब 1977 में उन्होंने चुनावों की घोषणा की, तो यह भी उन्होंने खतरा मोल लिया था और उसका परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा। उनके हाथ से सत्ता निकल गई। लेकिन यह ऐसा ही एक और उदाहरण है जिससे पता चलता है कि वह जानबूझकर खतर उठाने के लिए तैयार रहती थीं।

और अंत में जब हमें यह लगने लगा कि पंजाब के उग्रवादियों की समस्या का समाधान करने के लिए सेना की कार्यवाही आवश्यक थी—जिस बारे में मतभेद भी हो सकते हैं—तो उन्होंने

वह खतरा मोल लेने में भी हिचकिचाहट नहीं की और महोदय आज यह सिद्ध हो गया है कि उन्होंने अपने जीवन को दाव पर लगा कर स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्यवाही की। संभवतः यदि वह यह खतरा मोल नहीं लेतीं, तो आज हम उन्हें प्रधान मंत्री की सीट पर बैठा हुआ देख सकते थे। लेकिन वैसा नहीं हुआ।

महोदय, इस सभा में, मुझे ऐसे कई उदाहरण याद आ रहे हैं। मैं सदन का अधिक समय लेना नहीं चाहता। लेकिन मुझे अपने दो दिलचस्प उदाहरण उद्धृत करने की अनुमति दीजिए। एक घटना बंगला देश युद्ध के दौरान की है। एक दिन जब हम मध्याह्न भोजन के पश्चात् कुछ मामलों पर वाद-विवाद कर रहे थे तो हमने देखा कि श्रीमती गांधी बच्चों की सी मुस्कान लिए सभा की ओर भागती चली आ रही हैं। वह अपनी उसी सीट पर आई और अध्यक्ष महोदय की अनुमति से उन्होंने यह घोषणा की, "महोदय, मैं यहां पर यह घोषणा करने आई हूं कि ढाका स्वतंत्र बंगला देश की स्वतंत्र राजधानी बन गई है"। महोदय, उस घोषणा का समूचे सदन में समर्थन किया था और सदन में हलचल सी पैदा हो गई थी। वहां खुशी का वातावरण छा गया था। और मुझे याद है उस अवसर पर मैं जल्दी से खड़ा हो गया था। मुझे एक पुरानी कविता याद थी जो स्वतंत्रता सेनानी और शहीदों द्वारा गाई गई थी :—

हे स्वतंत्रता,
अनुभव कर चुका हो जो तुम्हारी असीम ओजस्विता को,
तज सकता है क्या तुम्हें वह ?
काल कोठरियों, बेड़ियों और अर्गलाओं से,
बांधा जा सकता है क्या तुम्हें ?
या तुम्हारी उदात्त चेतना को कोड़ों के प्रहार से
कम किया जा सकता है क्या ?

अंत में मैंने कहा कि मुझे कवि का नाम याद नहीं है तो उन्होंने शीघ्र ही उस कवि का नाम बताया। मुझे वह अनुभव अभी भी याद है।

महोदय, मुझे एक और निजी अनुभव याद है, जब 1977 में मैं सत्तारूढ़ दल म मंत्री था और मुझे वह दिन याद है जब श्रीमती गांधी इस सभा में चिकमगलूर निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हो कर आई थीं। दुर्भाग्यवश, मैं सदन में उपस्थित नहीं था। मैं उस समय राज्य सभा में रेलवे के संबंध में उठाए गए प्रश्नों का उत्तर दे रहा था। जब उन्होंने सभा में शपथ ग्रहण की तब मैं वहां उपस्थित नहीं था। जहां तक मुझे याद है मध्याह्न भोजन के पश्चात् वह श्री वसंत साठे के साथ ग्रंथालय के गलियारे से आ रही थीं। मैंने उन्हें देखा और कहा कि इंदिरा जी, बधाई हो। उन्होंने मुड़कर देखा और बड़े स्नेह से मुझे भी यही कहा। उन्होंने कहा "आपने अपनी सरकार की प्रतिष्ठा बढ़ायी है।" और फिर उन्होंने कहा "यह मेरा दुर्भाग्य था कि आप मेरे मंत्रिमंडल में नहीं रहे।" और मैंने अपने मजाकिया स्वभाव से कहा "महोदया, यह मेरा सौभाग्य था कि मैं आपके मंत्रिमंडल में नहीं रहा।" और वह बहुत हंसी और मुस्कराई। वह मुस्कान मुझे आज भी याद है। आंसुओं और व्यथा के बीच भी मैं उनकी मुस्कराहट कभी नहीं भूल सकता। वह मुस्कान हमारे साथ है।

उनकी मृत्यु होने से इस देश में कई लोगों ने बहुत कुछ खोया है। कांग्रेस (आई) ने अपना अध्यक्ष खो दिया। राष्ट्र ने अपना प्रधान मंत्री खो दिया। राजीव ने अपनी प्रिय मां खो दी। कांग्रेस (आई) को पुनः नया अध्यक्ष मिल सकता है। राष्ट्र को नया प्रधान मंत्री मिल सकता है, लेकिन राजीव ने अपनी माँ को हमेशा के लिए खो दिया है। और इसलिए मैं न केवल भूतपूर्व प्रधान-मंत्री को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं; मैं उनमें से एक हूं जो यह जानते हैं कि प्रधान मंत्री का पद क्या है; विश्व की समूची ताकत माँ के प्यार और स्नेह का विकल्प नहीं बन सकती और इसीलिए पूरी सभा की ओर से मैं श्री राजीव गांधी को अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं और उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि आपकी नीतियां और संदर्श कुछ भी हों, आप अपनी माता की हर इच्छा को विरासत मानकर आगे बढ़ायें।

धन्यवाद।

[हिन्दी]

कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री (श्री बूटा सिंह) : अध्यक्ष जी, आपने नई लोक सभा का कार्य शुरु करने से पहले विश्व की महान नेता, वर्तमान सदी की अद्भुत विभूति श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के प्रति श्रद्धांजलि दे कर हमारी लोक सभा को एक बहुत शानदार दिशा का मार्गदर्शन दिया। इस के लिए लोक-सभा और पूरा देश आपका आभारी है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के बारे में कुछ कहना बहुत कठिन है और खास कर जिन लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है कि उनके चरणों में बैठ कर अपने देश की सेवा करने का मौका मिला, जिन को उन के व्यक्तिगत प्यार का सहारा मिला, उनके लिए आज श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के प्रति श्रद्धांजलि देना बहुत कठिन है।

हमारा देश एक पुरातन देश है। हमारी संस्कृति बड़े-बड़े महान पुरुषों से, ऋषि-मुनियों से, अद्भुत संतों से, भरपूर है और इस पुरातन देश के महान संतों ने एक बहुत सुन्दर-आदर्श पुरुष के लिए अपनी वाणी में जो हमारे सामने उल्लेख किये हैं, उनमें से भक्त कबीर का उल्लेख आज मेरे मन में आता है। उन्होंने कहा है—

जननी जने तो भक्त-जन, कै दाता कै शूर
नहीं तै जननी बांझ रह, काहे गवावे नूर।

कबीर जी के मन में एक आदर्श पुरुष का जो दृष्य था, जो चित्र था, आज यदि हम उस दोहे को श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के जीवन पर, उनके व्यक्तित्व पर लगा कर देखते हैं तो एक-एक शब्द एक-एक भावना उनके व्यक्तित्व पर पूरी उतरती है। एक बहुत उच्च कोटी की भक्त, एक निहायत उदारचित-दाता और सही मायनों में शूर-गति की प्राप्त करने वाली शूरवीर आत्मा का नाम श्रीमती इन्दिरा गांधी है। उनके जीवनकाल से एक क्षण भी ऐसा नजर नहीं आता जब कि उन्होंने अपने आप को अपनी पवित्र मातृभूमि भारतवर्ष से अलग पाया हो, चाहे वह पूज्य माता कमला जी की गोद में खेल रहीं थी या उसके बाद अपने पूज्य पिता पं० जवाहरलाल नेहरू जी की उंगली पकड़ कर अपने देश के स्वतंत्रा संग्राम में जूझ रही थी या अपने पूज्य दादा श्री मोतीलाल नेहरू जी की बहुत ही आशापूर्ण नजर के सामने एक नन्हीं सी बालिका के रूप में अपनी वानर-सेना को संगठित कर रही थीं या उसके बाद देश के प्रधान मंत्री के रूप में 20 वर्ष के करीब उन्होंने अपने देश की सेवा की। उनके जीवन का एक-एक हिस्सा कबीर जी के दिये हुए इन सभी गणों के ऊपर पूरी तरह से सही उतरता है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को अपनी गतिविधियों पर नियन्त्रण था। जो उन के मन में था, देश की सेवा के लिए वही करती थीं। इस बात की परवाह नहीं करती थीं कि समय की हवा या सम-कालीन लोग क्या सोचते हैं। वह हमेशा अपनी निर्धारित दिशा में चलती थीं। जैसे अतीत से उनको कोई ऐसा एक संदेश मिला है, परिपूर्ण परमात्मा ने उनके सामने एक ऐसा लक्ष्य निर्धारित किया है जिससे उस पर वे चली जा रही थीं।

गुरु जी की वाणी में लिखा हुआ—"हम येही कार्य जगत् में आये"—जैसे बार-बार उनके सामने आता था कि हम यही कार्य लेकर जगत् में आये हैं। वह एक कार्य लेकर जगत् में आई थीं और जिसको करते करते वे चली गई। उनके जीवन का कोई भी पहलू उठा कर हम देख लें उससे यही सिद्ध होता है कि वे अपने मन में देशभक्ति का एक शानदार प्रकाश ले कर आई थीं और जिसको उन्होंने अपने में एक प्रण के रूप में ठाना, उसको आखरी सांस तक निभाया।

हमारा देश एक बड़ा विचित्र देश है। उनके प्रति जो देशवासियों की भावनाएं थीं, उनके प्रति जो श्रद्धा थी, जो विश्वास था उनसे वे उन्हें हमेशा एक चट्टान मानते थे। जब कभी भी देशवासियों के सामने कोई परेशानी होती थी तो वे इस चट्टान के सामने आते थे।

मुझे याद है जब 1969 में कांग्रेस का ऐतिहासिक विभाजन हुआ था। उसके बाद उन्होंने निर्णय लिया कि अपने देश के निर्धन लोगों की सेवा करने के लिए, किसानों और मजदूरों की सेवा करने के लिए, उपेक्षित वर्गों की सेवा करने के लिए देश की समूची पूंजी को जनहित में लगाऊंगी इसी विचार की पूर्ति के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बैंकों के राष्ट्रीयकरण का ऐतिहासिक प्रस्ताव किया। जैसा कि प्रो० मधु दंडवते जी ने कहा कि जागीरदारी के अन्तिम चिह्न के रूप में जो सामन्तों के प्रिवीपर्स थे, उनको समाप्त करने का प्रश्न था, उसके बारे में प्रस्ताव पास श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कराया। लेकिन देश के अन्दर इन गुटों के कुछ लोगों ने इन कानूनों को चुनौती देकर इन कानूनों को सर्वोच्च न्यायालय से समाप्त कराया।

आपको याद होगा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने इस भावना को एक चुनौती मानकर इस सदन में कहा था कि यदि लोक सभा से पारित हमारे विधेयक यहां पर जो प्रस्ताव पास होते हैं, जो कानून बनते हैं यदि उनको प्रभावशाली शब्द चुनौती दे सकते हैं तो मैं इस बात से बिल्कुल भी चिन्तित नहीं हूं और मैं लोगों के पास जाऊंगी और लोगों से ऐसी लोक सभा की मांग करूंगी जिसके पास किये हुए कानूनों और प्रस्तावों को कोई भी न्यायालय समाप्त नहीं कर सके। उसके बाद वे 1971 में जनता के सामने गईं और उन्हें लोक सभा में 1971 के चुनावों में एक शानदार और अभूतपूर्व जीत हासिल हुई। उस लोक सभा से उन्होंने इन दोनों कानूनों को पास करा कर यह साबित कर दिया कि श्रीमती इन्दिरा गांधी जी वही कुछ करती हैं जो हमारे राष्ट्र के लोग चाहते हैं।

तत्पश्चात् उन्होंने इतने काम किये जिनको कि श्री पी० वी० नरसिंह राव जी ने एक-एक को चुन-चुन कर बताया। सन् 1977 के बाद उनके साथ जो कुछ हुआ जिसको कि मारवाड़ी में कहते हैं कि "वेघा भी पराया हो गया" और उस वक्त दुनिया भर के लोगों ने उनके प्रति जो रुख अख्तियार किया, उसमें भी वे अपनी निर्धारित दिशा की ओर अग्रसर रहीं। फिर वे देश के लोगों की शक्ति देश के लोगों के भरोसे से इस सदन में चुन कर आईं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी देश के लोगों को अखण्ड मानती थीं। उनके सामने कोई जाति, कोई धर्म, कोई व्यक्ति न बड़ा था, न छोटा था। जैसे हिन्द महासागर में सभी नदियां शामिल होने

के बाद किसी भी बड़े से बड़े साइंसदां के लिए यह कठिन हो जाता है कि वह हिन्द महासागर के जल को अलग अलग कर के यह बता दे कि यह पानी गंगा का है, यह नर्मदा का है, यह सतलुज का है, यह ब्यास का है। इसी प्रकार वे भारत के लोगों को मानती थीं। जैसे हिन्द महासागर का पवित्र जल हमारे लिए एक है, उसी प्रकार से वे भारतवर्ष के लोगों को भी एक मानती थीं। उनका अंतिम समय भी शायद इसी विश्वास के ऊपर था। सब लोगों ने कहा कि पंजाब में इतना उपद्रव हुआ, सैनिक कार्यवाई हुई, इसलिए आपको इस तरफ ध्यान करना चाहिए, परन्तु उन्होंने अपने सिक्यूरिटी गार्डस के बारे में कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है हिन्दुस्तान के लोगों पर, इसलिए मैं किसी प्रकार यहां पर स्थानांतरण नहीं करूंगी। जिस तरह से उनका निधन हुआ उससे न केवल भारतवर्ष में बल्कि समूचे विश्व में यह बात स्पष्ट हो गई है, क्योंकि उनके अंतिम संस्कार पर जो 102 देशों के लोग आए, उस समय मुझे अपने साथी श्री शिवशंकर जी के साथ बहुत से लोगों को पालम एयरपोर्ट से उनको साथ लेकर घर तक पहुंचाना था। यह सेवा मेरे जिम्मे लगी थी। उस वक्त बहुत से लोग इस तरह से कंधे पर सिर रखकर रो रहे थे जैसे अपनी मां हमारे बीच में न हो।

श्रीमती इन्दिरा गांधी भारतवर्ष की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए माता के रूप में एक मार्गदर्शिका के रूप में, एक विश्व की नेता के रूप में शांति की अग्रदूत थीं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की कार्यविधि में देश ने जो प्राप्तियां की हैं उनको एक-एक बच्चा जानता है। देश के उत्पीड़ित लोग, पिछड़े हुए वर्ग, देश के अल्पमत के लोग, किसान-मजदूर सब इन्दिरा गांधी जी को ऐसा मानते थे जैसे वे हमारे लिए ही देश का नेतृत्व कर रही हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी आज हमारे बीच नहीं हैं मगर हमारे लिए आशा की किरण मौजूद है। श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने जो तीन पीढ़ियों से प्राप्त किया था वह सारा का सारा समग्र, सारा का सारा खजाना हमारे सामने युवा नेता श्री राजीव गांधी के रूप में हमारे बीच में है, इसलिए इस देश को पूरा विश्वास है, आशा की किरण है कि श्रीमति इन्दिरा गांधी जी ने जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के पद-चिह्नों पर चल कर, उनके चरणों पर बैठ कर हासिल किया, स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू जी से जो उन्होंने ट्रेनिंग ली और अपने जीवन में जिस चीज को उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर प्राप्त करने की कोशिश की, उसको पूरा करने के लिए पूरा राष्ट्र आज श्री राजीव गांधी के पीछे दीवार बनकर खड़ा है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी उन युग पुरुषों में शामिल हो रही हैं जिन युग पुरुषों के बारे में हमारे ग्रन्थों में, हमारे वेदों में, पवित्र गीता ज्ञान में कहा गया है, सही मायनों में वे कर्मयोगी थीं। मैं उनके व्यक्तित्व के बारे में कोई उपमा नहीं दे सकता हूं। उनका व्यक्तित्व शायद किसी चीज से मिलाया नहीं जा सकता है। ऐसे व्यक्तित्व के लिए हमारे गुरु तेग बहादुर साहब जी ने एक बहुत सुन्दर शब्द कहा है, वह कह कर मैं क्षमा चाहूंगा। उन्होंने फर्माया है कि—

जो नर दुख में दुख न माने, सुख सनेह और भय न जाने,
कंचन माटी माने,
न ही निन्दा न्हं सतुती जाके, नाहीं मान अभिमाना,
हंख सीग नं रहे नियारी, तहि जग तत पछाना।
गुरु किरपा जिह नर की कीनी, तिह यही जुगति पछानी
नानक लीन भयो गोबिन्द संग, जियों पाणीं संग पाणी।

इस तरह से श्रीमती इन्दिरा गांधी जी इस संसार से गई हैं जैसे प्रभु-परमात्मा एक महान सागर है और श्रीमती इन्दिरा गांधी एक सरस्वती नदी की तरह उसमें लीन हो गई हैं। मुश्किल हो रहा है पता लगाना कि प्रभु क्या है, इन्दिरा गांधी क्या है।

[अनुवाद]

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : महोदय, मैं अपने दल कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से तथा अपनी ओर से अपनी दिवंगत प्रधानमंत्री की स्मृति में अपनी श्रद्धापूर्ण श्रद्धांजली अर्पित करती हूं। वह विश्व की महान राजनेताओं में से एक थीं। जिन्होंने विश्व शान्ति के लिए, गुट निरपेक्ष के लिए एक नई आर्थिक व्यवस्था के लिए तथा समाजवादी देशों के साथ मित्रता करने के लिए लड़ाई लड़ी और उन्होंने यह लड़ाई इसलिए लड़ी कि हमारा देश आर्थिक विकास के लिए सभी शांतिपूर्ण ताकतों के साथ मित्रता करना चाहता है।

महोदय, उनकी हत्या से तथा जिन परिस्थितियों में उनकी हत्या की गई है उससे राष्ट्र को भारी आघात पहुंचा है। आज भी यह प्रश्न हमारे सामने है कि इस नृशंस हत्या को लिए जिम्मेदार कौन लोग हैं ? उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए मैं फिर से याद दिलाना चाहती हूं कि हमें इस का पता लगाना है कि यह कैसे हुआ और इस हत्या के वास्तविक अपराधी कौन हैं। साथ ही यह भी पता लगाना है कि वे विदेशी साम्राज्यवादी कौन हैं। जिनकी रुचि हमारे देश में अस्थिरता की स्थिति पैदा करने में रही है।

यद्यपि मैं उनके साथ लम्बे अरसे तक नही रही हूं। मेरा उनका साथ केवल पिछले पांच वर्षों का ही रहा है जबसे मैं इस संसद् में आई। लेकिन उनकी एक बात जिससे मैं विशेष रूप से प्रभावित हुई वह है उनके चेहरे पर विशेष मुस्कान जो हमें उस समय देखने को मिलती थी जब देश में किसी सम्पदा का, चाहे वह तेल हो अथवा कुछ और, पता चलता था। इसके लिए मैं उनका आदर करती हूं। उनके नेतृत्व में भारत ने कई दिशाओं में प्रगति की यद्यपि आर्थिक विषमताएं भी साथ-साथ बढ़ीं।

अब मैं एक और बात कहना चाहूंगी। महिलाओं में उनका अत्यन्त विशिष्ट स्थान था। हममें से उन सभी को चाहे हम उनके विचारों से सहमत थे अथवा नहीं, वास्तव में इस बात का नाज था कि वह राष्ट्र की सबसे उत्कृष्ट और प्रशंसनीय महिला हैं।

उनके गुणों का उल्लेख सभी ने किया है और मैं भी उनके एक सबसे प्रभावशाली गुण का उल्लेख किए बिना नहीं रह सकती और वह था उनका दृढ़ संकल्प और साहस। हम सार्वजनिक जीवन में चाहे उनसे सहमत थे अथवा असहमत पर हम वास्तव में उनके दृढ़ संकल्प और साहस की सराहना करते हैं चाहे उनकी धारणा जो भी रही हो।

• इन शब्दों के साथ मैं उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करती हूं और साथ ही श्री राजीव गांधी के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती हूं।

प्रो. एन. जी. रंगा (गुंटूर) : अध्यक्ष महोदय, जैसा कि श्री नरसिंह राव ने कहा है कि इस अवसर पर इतने कम समय में श्रीमती गांधी के महान गुणों और उनकी उपलब्धियों में से कुछेक का भी वर्णन कर पाना अत्यन्त कठिन है। इसलिए मैं आपके द्वारा तथा अन्य सदस्यों, विशेषकर विपक्ष के नेताओं—श्री दण्डवते तथा दो साम्यवादी दलों के नेताओं तथा अन्य सदस्यों द्वारा उनके

बारे में जो कुछ कहा गया है उसका समर्थन करता हूं तथा जो भी शब्द दोनों पक्षों की ओर से कहे गए है, उन्हें मैं अपने शब्द मानते हुए दिवंगत नेता को श्रद्धांजली देता हूं।

मैं सभा को यह बताना चाहता हूं कि मैंने क्या महसूस किया है और करोड़ों लोग क्या महसूस कर रहे हैं और क्या सोच रहे हैं। मेरे निर्वाचन क्षेत्र के लोग तो मात्र उनका उदाहरण हैं। उनके लिए वह यशोदा थीं, फातिमा थीं, यशोधरा और मरियम थीं। पंजाब के लोगों ने शहीद भगत सिंह की मां को, इस सभा अथवा अन्य किसी सरकार की स्वीकृति के बिना ही, जैसे पंजाब-माता का खिताब दे दिया था उसी तरह लोगों ने भी उन्हें अपनी मां मान लिया है। पिछले चुनाव में अपने तीस दिन के दौरे में प्रायः प्रतिदिन मैं सैकड़ों लोगों से मिला और मैंने लोगों को आंसू बहाते और निढाल होते देखा। लोगों ने यह महसूस किया मैं उनके भाई के समान हूं कुछ के लिए पिता के समान हूं और मैंने अपने एक ऐसे बच्चे को खो दिया है जो अत्यन्त निर्भीक था और जिसके समान विश्व के इतिहास में अन्यत्र और कोई नहीं हुआ। कई महान पुरुषों ने जन्म लिया, कई पैगम्बर हुए लेकिन ऐसा कोई नेता नहीं हुआ जिसे 70 करोड़ लोगों के विशाल समुदाय ने—पुरुषों और महिलाओं ने—उसे अपनी मां, अपनी बहन और अपने बच्चे के रूप में माना हो। वह लोगों से प्यार करती थीं और लोग उनसे राजनीति में इस सभा में दोनों पक्ष होते हैं और विपक्ष ने उनके काम में खामियां पाईं। हम सबको उसका अनुभव है जैसाकि अक्सर एक परिवार में होता है। महोदय, वह एक और ही किस्म की महिला थीं जिन्हें सब इतना अधिक चाहते थे। किसी महिला की प्रशंसा करना कोई विशेष बात नहीं है। एक सौंदय की वस्तु अथवा एक कवि के नाते एक महिला की प्रशंसा करना कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन इन्दिरा जी की उनकी समस्त राजनीति के परिप्रेक्ष्य, में उनके जीवन और सार्वजनिक कार्यों को निश्चित दिशाओं के बावजूद जिस तरह से देश के करोड़ों लोगों ने उन्हें चाहा और प्यार दिया मेरे विचार में किसी के प्रति इससे बढ़कर महानतम् श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है।

जब उन्होंने 'गरीबी हटाओ' का नारा लगाया और गरीबी हटाने के लिए संघर्ष में जुटीं तो उस समय उनका ध्यान उन्हीं लाखों निर्धन लोगों की ओर था जो झुग्गी झोपड़ियों, पटरियों, सड़कों, रेलवे प्लेटफार्मों पर या 6 फुट की जगह में अर्थात् पैर पसारने तक की जगह में जिन्दगी बसर कर रहे हैं। उन्हें उन्हीं का ध्यान था। जब भी कभी कोई प्राकृतिक आपदा आई तो अगर सबसे पहले वह खुद वहां न पहुंच पाई तो उन्होंने अपने समर्थकों को, अपने मित्रों को, अपने अनुयायियों को वहां सहानुभूति प्रकट करने के लिए, उन लोगों को सहायता पहुंचाने के लिए तुरंत भेजा। वह ऐसी महिला थीं। आपने उनकी राजनीति सत्ता के बारे में देश के नेतृत्व के बारे में उल्लेख किया है। महात्मा गांधी और नेहरू के नाम पर उन्होंने 100 से भी अधिक ऐसे देशों के करोड़ों लोगों को संरक्षण प्रदान किया जो हाल ही मे स्वतंत्र हुए हैं और जिन्हें पूर्व तथा पश्चिम दोनों ही तरफ से साथ देने या विरोध करने की धमकियां दी जा रही हैं। और जिनके कारण वे बुरी तरह भयभीत है वह उनकी सुरक्षा के लिए एक चट्टान की भांति खड़ी रही। वे भी उन्हें अपनी मां की तरह मानते हैं।

मैं इस दुख को अभी भूल नहीं पाया हूं। उनका अभाव महसूस कर रहा हूं। मेरे मित्र श्री दण्डवते ने प्रधान मंत्री, जोकि उनके पुत्र हैं, के प्रति संवेदना व्यक्त की है। मैं देशवासियों के प्रति, देश की महिलाओं के प्रति, बच्चो के प्रति, लाचार और असाहय लोगों के

प्रति, तथा उनके प्रति जिन्हें हमारे काले इतिहास के परिणाम स्वरूप जुल्म का शिकार बनना पड़ा, संवेदना प्रकट करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, मैं उन शब्दों के लिए, जो आपने कहे, आपको धन्यवाद देता हूं और सभी अन्य मित्रों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मेरी अपनी बेटी को श्रद्धांजली अर्पित की है ।

[हिन्दी]

श्री शरदचन्द्र गोविंदराव पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, इंदिरा जी की हत्या एक जबर्दस्त विश्वनेता का अस्त है । पिछले कई सालों में इतना प्रभावशाली नेता, पंडित जी के बाद हिन्दुस्तान में पैदा नहीं हुआ । कुछ चन्द शब्दों में इंदिरा जी के बारे में बोलना बड़ी मुश्किल बात है, मगर इस देश की इज्जत बढ़नी चाहिये, यह देश विश्व में बलवान देश होना चाहिये यह सपना उन्होंने हमेशा के लिये अपने सामने रखा था । देश के बाहर देश की इज्जत बढ़ाने के लिये जो योगदान उन्होंने दिया वह भारतवासी कभी भूल नहीं सकते ।

पंडित जी की विदेश नीति उन्होंने चलाई, न केवल चलाई बल्कि मजबूत की । विश्व के विकासशील देशों की तीसरी शक्ति मजबूत करने के लिये ज्यादा से ज्यादा कोशिश की और इससे सबसे ज्यादा लाभ जो छोटे देश हैं, जहां गरीबी बहुत है, उनको हुआ । ऐसे सभी देशों में एक आत्म-विश्वास पैदा करने का काम इंदिरा जी ने किया था ।

इंदिरा जी, जैसे यहां दंडवते जी ने बताया, देश की एकता के लिये शहीद बन गई । कई बातें उनकी हम बता सकते हैं कि देश की एकता के लिये वह हमेशा सोचती थीं । मुझे याद है, 1975 में काश्मीर में मीर कासिम साहब की गर्वनमेंट थी । काश्मीर को नेशनल स्ट्रीम में लाने के लिये इंदिरा जी ने शेख अब्दुला को वहां बुलाया, मीर कासिम ने कुर्सी खाली की, शेख अब्दुला को वहां का मुख्यमंत्री बनाया और काश्मीर की जनता के मन में हिन्दुस्तान के बारे में एक दिलचस्पी पैदा हुई, एक विश्वास पैदा हुआ । अपनी पार्टी का राज्य छोड़ने का समय आयेगा तो भी छोड़ने के लिये हमें तैयार रहना चाहिये, क्योंकि इसमें देश की एकता है, इसका विचार उनके मन में था ।

अपने देश में नार्थ-ईस्ट स्टेट छोटे-छोटे स्टेट्स में साथ रहने वाले लोगों के प्राइड को मजबूत करने के लिये, शक्तिशाली करने के लिए उन्होंने बहुत काम किया, इससे हिन्दुस्तान के मजबूत होने में बहुत मदद हो गई ।

मैं जिस स्टेट से यहां आता हूं, उस संयुक्त महाराष्ट्र की निर्मिति में यहां सबसे ज्यादा योगदान इंदिरा जी ने दिया था । कई बातें ऐसी हैं जिन्हें हम भूल नहीं सकते । उनके मन में हमेशा माडर्न इंडिया का सपना था । माडर्न इंडिया बनाने के लिये माडन साइंस, माडर्न टैक्नोलाजी, स्पेस रिसर्च के बारे में हमें ज्यादा ध्यान देना चाहिये, और वह उन्होंने हमेशा दिया ।

अणु शक्ति का महत्व मानव समाज को ताकत देने के लिये हो सकता है । कई देश विश्व में अणु शक्ति की मदद से मानव समाज का संहार करने, नष्ट करने की बात सोचते हैं, मगर इंदिरा जी ने हमेशा अणुशक्ति की मदद से यह सोचा कि हम गरीबी पर हमला कर सकते हैं, गरीबी दूर कर सकते हैं, उसे मिटा सकते हैं और देश को मजबूत करने के लिये उससे मदद ले सकते हैं । उन्होंने यह विचार अपने सामने रखा था ।

इंदिरा जी का जीवन एक अजीब जीवन था। जब उनकी जिन्दगी में तूफान पैदा होते थे, चुनौती पैदा होती थी तो उनका व्यक्तित्व और प्रभावशाली दिखाई देता था।

कई मौके इस हाऊस ने और विश्व की जनता ने देखे कि जब-जब उनके ऊपर संकट आते थे, चुनौतियां आती थीं, तो वह और भी ज्यादा बलशाली दिखायी देती थीं।

इंदिरा जी की हत्या, जैसा मैंने शुरू में बताया, विश्व के बलशाली नेता का अस्त है। उनके निधन से हिन्दुस्तान और गुट निरपेक्ष देश आदि सभी को बहुत नुकसान हुआ है, इसलिए हम लोगों पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी आ गई है। सबसे पहली जिम्मेवारी हम लोगों पर यह है कि हिन्दुस्तान की एकता मजबूत करने के लिये जो कुछ उन्होंने किया उसे हम करें। हिन्दुस्तान की एकता को मजबूत करने के लिये इंदिरा जी और पंडित जी ने जो सैक्युलरिज्म के विचार रखे, उन्हें भी पूरा करने के लिए हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए। सैक्युलरिज्म और देश की एकता, इसमें जितना ज्यादा ध्यान देंगें, उससे इन्दिरा जी की सच्ची श्रद्धांजलि मिलेगी।

[अनुवाद]

श्री जी. जी. स्वेल (शिलांग) : अध्यक्ष महोदय, श्रीमती इंदिरा गांधी जैसा जीवन दुर्लभ है अति दुर्लभ लेकिन जिस प्रकार से उन्हेंने अपना जीवन-यापन किया वह और भी दुर्लभ है। इस बात का कोई तर्क वैज्ञानिक स्पष्टीकरण नहीं है, कि उन जैसा व्यक्ति किसी विशेष परिवार में, किसी विशेष मां-बाप से, किसी विशेष स्थान या किसी विशेष समुदाय हीं में क्यों पैदा हो। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह व्यक्ति अपने जीवन का निर्माण कैसे करता है। इन्दिरा गांधी का जीवन गौरवपूर्ण रहा और उन्होंने अनेक उपलब्धियां अर्जित कीं। यह एक समृद्ध जीवन था, सही व असली अर्थों में समृद्ध। उनकी समृद्धि धन या सांसारिक सम्पदा संबंधी नहीं थी। उनकी समृद्धि इस बात में थी कि उन्हें देश के 70 करोड़ लोग और विदेशों के करोड़ों लोग प्यार करते थे। मैं प्रायः सोचता था कि श्रीमती इन्दिरा गांधी के व्यक्तित्व को समृद्ध बनाने का रहस्य क्या है। यहां तक कि इस देश में प्रायः प्रत्येक घर, प्रत्येक झोंपड़ी और यहां तक कि दूर-दराज के स्थानों में भी उन्हें प्यार किया जाता था। मैं वैसे ही एक स्थान—भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से जीत कर आया हूं। मुझे अच्छी तरह वह समय याद है जब हमारे क्षेत्र में श्रीमती इन्दिरा गाँधी को गोली लगने का समाचार आया और हमें पता लगा कि वह जिंदा नहीं रह सकीं। जैसे ही यह हमाचार गलियों में पहुंचा, तुरन्त ही सभी दुकानें बन्द कर दी गईं। ऐसा लगा कि जैसे तूफान आ गया हो, और कुछ देर हिंसा के बाद चारो तरफ खामोशी छा गई। गांवों में महिलाओं की आंखों में आंसू भर गए। इस माहौल पर देख कर ही विश्वास किया जा सकता था और मैंने अपने आप से यह प्रश्न किया कि, "यह कैसे और क्यों हुआ ?" मैंने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी का जीवन समृद्ध था। यह इसलिए था क्योंकि उनका जीवन निर्मल था उनमें अपने आस-पास वाले लोगों से खुशियां और शक्ति प्राप्त करने की क्षमतां थी। उनमें कविता की सराहना करने की अद्भुत क्षमता थी। हमने समाचार पत्रों में पढ़ा है कि अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले, वह अपनी आत्मकथा आदि के कुछ अंश लिखती रहती थीं। जिसमें उन्होंने लिखा है कि जब तक भारत के लोग उनके साथ हैं तब तक वह दीन-हीन नहीं हो सकती। यही उनकी ताकत थी। भारत के 70 करोड़ से अधिक लोग, जिन्हें वह प्यार करती थीं, उनकी सही ताकत थे। उन्हें शक्ति प्राप्त थी, क्योंकि वह सूर्य चमकते सूर्य से, पवन से, पेड़ों से, फूलों से, और उन लोगों से, जिनसे वह मिलती थीं और जिनकी वह सेवा करती थीं, शान्ति और सुख प्राप्त करती थीं। इस तरह से वह वास्तव में

मानवतावादी थीं। मैं इस अवसर पर उनकी अनेक उपलब्धियों के बारे में नहीं कहना चाहता, क्योंकि इसमें काफी समय लग जायेगा और शायद किसी दिन कोई योग्य व्यक्ति उनकी जीवनी भी लिखे।

14.00

जैसा कि पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संदर्भ में मेरे मित्र श्री शरद पवार ने अभी कहा है, मैं भी उसका विशेष जिक्र करना चाहूंगा। मैं 1962 में इस सभा का सदस्य निर्वाचित हुआ था। मेरा एकमात्र उद्देश्य उन लोगों के लिए एक अलग राज्य की स्थापना करवाना था। इस पर उस समय से लेकर जब पंडित जी थे, और मैं युवा था श्री लाल बहादुर शास्त्री के अल्पकाल तक इस अवसर पर कई चरणों में चर्चा हुई। मैं निराश सा हो चुका था। यह तभी हुआ जब श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री बनीं। उनमें साहस था और उन्होंने इस क्षेत्र के लोगों की मान-मर्यादा के अनुरूप उन्हें दर्जा दिया। उस दिन जब अलग राज्य की स्थापना के लिए विधेयक पारित किया गया, मैंने यहां कहा था कि देश की महानता को बनाये रखते हुए हमें भारत के इस भाग को एक खूबसूरत क्षेत्र बनाना चाहिए जोकि भारत की सीमा पर एक खूबसूरत स्थान बने मेरा वह वायदा पूरा नहीं हो सका। इसके विपरीत उल्टी बातें हो रही हैं। मुझे खुशी है कि प्रधान मंत्री यहां विद्यमान हैं जोकि युवाओं के लिए एक नई आशा हैं और उन्होंने वादा किया है कि वह देश को 21वीं सदी में ले जायेंगे। मैं विश्वास करता हूं कि देश को 21वीं सदी में ले जाते समय, भारत के पूर्वोत्तर भाग को भी पूरी तरह साथ लिया जायेगा।

मैंने कहा है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी का जीवन समृद्ध था। लेकिन उनके जीवन में आपदायें भी आई थीं। उनकी मृत्यु आश्चर्यजनक ढंग से व्यथा में हुई। उनके जीवन में कई व्यक्तिगत और पारिवारिक संकट उपस्थित हुए, किन्तु उन्होंने कभी भी अपना मानसिक सन्तुलन नहीं खोया और उन्होंने प्रसन्न रहने की क्षमता को बनाए रख सकी। उनके जीवन में घटनाएं तेजी से घट रही थीं। उन्होंने जीवन का उतार-चढ़ाव देखा था। दुःख और सुख का उनकी जिन्दगी में आश्चर्यजनक संगम था। ऐसी थीं इन्दिरा गांधी। लेकिन वह जीवन समाप्त हो गया। यह अचानक समाप्त हो गया। मृत्यु उन्हें छीन ले गयी। लेकिन रात के अन्धेरे में वह एक रोशनी की तरह थीं तथा उनके कृत्य सदा हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

धन्यवाद।

[हिन्दी]

श्री मोहम्मद महफूज अली खां (एटा) : स्पीकर साहब, बहुत से लोगों ने इस मौके पर अपने ख्यालात का इजहार किया है, मैं सबसे पहले एक शेर पढ़ना चाहता हूं :—

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

इस शेर में उनके बारे में सारी बातें आ जाती हैं। इन्दिरा जी की हस्ती और उन का मुकाम अपनी जगह पर एक मिसाल है, बल्कि हर शक्स इस बात को मानने के लिए तैयार है। उनको गोलियों से हलाक किया गया, जब रेडियो पर सुना, तो बड़ी तकलीफ हुई। कितनी नाजुक, कितनी व्यवहार-कुशल,

कितना मुसम्मम इरादा—देश के लिये क्या-क्या उन्होंने नहीं किया और उनको गोलियों से हलाक किया गया, बड़ी तकलीफ पहुंची। हमारे हिन्दुस्तान की प्राइम मिनिस्टर हमारे ही लोगों की गोलियों का शिकार हों, यह कितना अफसोस नाक और दर्दनाक वाक्या है ।

इन्दिरा जी के लिए जिन लोगों के साथ उन का ज्यादा वास्ता रहा है, उन्होंने अपने कुछ वाक्यात भी बयान किये हैं , मैं तो सिर्फ अखबारों में ही पढ़ता रहा हूं। इसमें भी दो राय नहीं है कि इन्दिरा जी कुछ जिद्दी भी थीं और जो चाहती थीं वही करती थीं, लेकिन यह बात अपनी जगह पर है। हम लोग जो कि मुखालिफ पार्टियों के हैं, उनकी पालिसीज़ से हमारा इख्तलाफ हो सकता है, लेकिन उनके कुछ काम इस किस्म के थे, जिनको हमें मानना ही पड़ेगा । एक बहुत उम्दा पोलिटिशीयन, एक बहुत अच्छा दिमाग इस हिन्दुस्तान का ही नहीं, बल्कि दुनियां का हमारे बीच से चला गया ।

मैं ज्यादा क्या कहूं, चूंकि और साहबान भी यहां पर बोलेंगे, इसलिये इस खिराजे-अकीदत के मौके पर जो अपने तास्सुरात होते हैं, वही ब्यान किये जाते हैं, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी डी. एम. के. पी. की तरफ से खिराजे-अकीदत पेश करता हूं और श्री राजीव गांधी साहब को, जो उनके साहबजादे हैं, और उन के बच्चों के तईं पूरी हमदर्दी का इज़हार करता हूं और खुदा से दुआ करता हूं कि इन्दिरा जी की रूह को भगवान अच्छी जगह दे ।

श्री गिरधारी लाल डोगरा (ऊधमपुर) : जनाबेआली, मैं बहुत मशकूर हूं, आप ने मुझे मौका दिया, इस संजीदा तहरीक पर बोलने का। हमारा देश न सिर्फ एक महान देश है, बल्कि इस की अपनी अज़मत है, जिन्दगी के हर शोबे में। जहां तक सियासी जिन्दगी का ताल्लुक है, मैं समझता हूं—बहुत बड़ी हस्तियां हुई हैं हमारी हिस्ट्री में, जिन्होंने हमारे मुल्क को सियासी दुनिया में चार-चांद लगाये। स्वराज्य से पहले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी थे जिन्होंने देश को आज़ाद कराया, लेकिन आज़ाद किस तरह से कराया—अदमतशद्दुद के तरीके को अपनाते हुए आज़ाद कराया। उन्होंने जिस कामयाबी के साथ इस तहरीक को चलाया और हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ और दुनियां में हमारा नाम रोशन हुआ। उसके बाद पंडित जी ने हमें प्लानिंग दी, फॉरन-पॉलिसी दी, उससे हमारी अज़मत में इजाफा हुआ और फिर इंदिरा जी ने नॉन-इलान्ड-मूवमेंट को, जिसका पंडित जी, मार्शल टीटो और कर्नल नासिर ने मिलकर आगाज़ किया था, अरुज तक पहुंचाया। दुनिया में अमन की तहरीक को जितना अरुज तक इंदिरा जी ले गईं, उनता किसी ने नहीं किया ।

मुझे आपकी मेहरबानी से कुछ दूसरे देशों में जाने का मौका मिला है। वहां लोग हम से पूछा करते थे कि क्या आप के लोग इंदिरा जी के साथ हैं। तो मैं उनसे पूछता था कि आप ऐसा क्यों पूछते हैं। इस पर वे कहते थे कि दुनिया के अन्दर एक खतरनाक जंग होने वाली है, दुनिया की बड़ी बड़ी दो ताकतों में अगर टक्कर हो गई तो दुनिया में इंसानी जिन्दगी को बहुत खतरा है और इंदिरा जी हैं जो इसको रोके हुई हैं। उनको अगर ताकत हासिल हो गई तो दुनिया के अन्दर जंग नहीं हो सकती। वह ज़िम्मेदारी अब हमारे नए प्रधानमंत्री जनाब राजीव साहब पर आ गई है और वे उसको बखूबी निभा रहे हैं।

जहां तक मार्डन इंडिया का ताल्लुक है, दुनिया के अन्दर इंडस्ट्रीज में हमारा नाम बन गया साइंस के अन्दर हमारा नाम बन गया तथा और मामलों में दुनिया के अन्दर हमारी एक जगह बन गई है। जहां तक एग्रीकल्चर का ताल्लुक है, जनाबेआली, इसका आपने भी ज़िक्र किया है, कि किस कदर लोगों के अन्दर उन्होंने उत्साह पैदा किया और साधन भी दिए। सबसे बड़ी बात यह है कि बीस

प्वाइंट प्रोग्राम के अन्दर हर खेत के अन्दर, चाहे पहाड़ी इलाका हो या मैदानी इलाका हो, छोटे-से-छोटे खेत में नया फर्टिलाइज़र बीज और पानी पहुंचाने की व्यवस्था की, जिससे किसानों के अन्दर एक जागृति पैदा हो गई। जैसा कि स्वैल साहब ने भी कहा है, देश के दूर दराज के इलाकों में भी इंदिरा जी के नाम से लोग वाकिफ़ हैं। मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि इंदिरा जी गरीबों की आशा थीं, अकीदत थीं। चुनाव के दौरान दो हरिजन महिलायें वोट डालने जा रही थीं। जब उनसे पूछा गया कि आप किसको वोट देंगी, तो उन्होंने कहा कि भारत-मां के हाथ को वोट देंगी और अपनी मां के हाथ को वोट देंगी। वे लोग उसको मां कहकर पुकारती थीं। वह सचमुच उनकी मां थीं। वे लोग समझते थे कि गरीबों की देखभाल वे ही कर सकती हैं और कोई नहीं करेगा। जहां तक काश्मीर का सवाल है, जब वे प्राइम मिनिस्टर नहीं थीं, वे दो दफा पुंछ और राजोरी में गईं और उन्होंने इस कदर लोगों के अन्दर सैक्युलरिज्म और नेशनलिज्म की भावना पैदा कर दी, जो एक आम आदमी नहीं कर सकता है। वे उन के साथ मुहब्बत करते थे और वह गरीब आदमियों के साथ मुहब्बत करती थीं। मेरा ख्याल है सारे—हिन्दुस्तान के गरीब ही नहीं, दुनिया के गरीब उन की तरफ देखते थे। तमाम डवेलपिंग कन्ट्रीज हमारी टैकनोलाजी, हमारी टैकनीक्स, हमारी मदद के साथ तरक्की करने की कोशिश कर रहे थे।

अब हम उन के रास्ते पर चलते रहेंगे और कोशिश करेंगे कि जो काम वह अधूरा छोड़ गई है हम सब मिल कर राजीव जी के हाथ मज़बूत करते हुए, उन सब बातों को पाये तकमील तक पहुंचायेंगे।

[अनुवाद]

श्री फ्रैंक एंथनी (नाम-निर्देशित आंग्ल-भारतीय) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय इन्दिरा गांधी के बारे में आपने जो विचार व्यक्त किए हैं और उन्हें जो श्रद्धांजलि अर्पित की है उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। अध्यक्ष महोदय, क्या मैं यह कह सकता हूं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की पाशविक हत्या पर लोगों को लगे आघात, उसकी विभिषिका, अकथनीय विषाद तथा वास्तव में अकथनीय क्रोध को किसी भी शोक प्रस्ताव में व्यक्त नहीं किया जा सकता। प्रधान मंत्री जी ने अत्यन्त सुन्दर और संक्षिप्त श्रद्धांजलि दी है। में उनके आत्म-सन्तुलन और गरिमा पर चकित हूं। परन्तु मेरा विश्वास है कि सभी भाषणों में किए गए सामान्य उल्लेख द्वारा न केवल राष्ट्रीय नेता के रूप में बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय नेता के रूप में तथा एक समर्पित धर्म निरपेक्ष कार्यकर्त्ता के रूप में श्रीमती गांधी के उत्कृष्ट गुणों की सच्ची श्रद्धांजलि की झलक भी नहीं मिलती किसी ने भी एक महिला और एक मित्र के रूप में उनके गुणों तथा उनकी प्रतिभा और सहृदयता का उल्लेख नहीं किया है। मैं उन्हें उनके जीवन के सम्भवतः सबसे अधिक कठिन तीन वर्षों के समय में अच्छी प्रकार जान सका। यद्यपि मैं कांग्रेस पार्टी का सदस्य नहीं था, फिर भी उन्होंने मुझसे अपनी पैरवी करने के लिए कहा और मैंने वैसा किया। इस कारण न केवल मैं बल्कि मेरी पत्नी भी उनके व्यक्तिगत मित्र बन गए।

अध्यक्ष महोदय, मैंने एक मासिक पत्रिका, 'रिव्यू' जिसका मैं सम्पादन करता हूं का एक विशेषांक निकाला जो 36 पृष्ठ का था मुख चित्र के रूप में मैंने इन्दिरा गांधी का सुन्दर चित्र रखा और इसका शीर्षक दिया "इन्दिरा प्रियदर्शिनी गांधी"। उसके नीचे उप-शीर्षक था 'ए लीजन्ड इन हर लाइफ टाइम' (अपने जीवन काल में एक किंवदन्ती) चित्र के नीचे एक उद्धरण था।

"टु लिव इन हार्टस बीहाईड इज नाट टू डाई।"
(मृत्युपरांत लोगों के हृदयों में वास करना मृत्यु नहीं है)

तत्कालीन सरकार द्वारा तीन वर्षों तक—मैं समझ-बूझ कर कह रहा हूं—उनका उत्पीड़न किया गया और इस दौरान मैं उनसे प्रायः प्रतिदिन मिलता था, कभी कभी दो बार भी। वह मुझे हमेशा शारीरिक दृष्टि से कमजोर लगीं परन्तु जैसे-जैसे मैंने उन्हें और अच्छी तरह जाना तो मैंने देखा कि इस कमजोरी में भी एक अदम्य साहस और विस्मयकारी आन्तरिक शक्ति थी। उन्हें तीन अक्टूबर को गिरफ्तार किया गया था और मुझे यह पता नहीं था कि मुझे ही उनके बचाव के लिए उसी दिन पेश होना पड़ेगा। संजय गांधी ने मुझे 4 तारीख की प्रातः टेलीफोन किया। मैंने कहा "मैंने अभी तक स्नान नहीं किया है।" उन्होंने कहा 'कृपया आप आंए और पेश हों क्योंकि मेरी माता जी चाहती है कि विशेष रूप से आप ही पेश हों'। हमें यह पता नहीं था कि पुलिस उन्हें कहां पेश करने जा रही है। मैंने अपने दो कनिष्ठ वकीलों को नई दिल्ली के न्यायालयों की ओर दौड़ाया।

पुलिस अभियोजक ने मुझे कोई भी कागज दिखाने से इन्कार कर दिया। तत्पश्चात मैंने न्यायालय से कहा सौभाग्यवश एक दुर्भावनापूर्ण विरोधी सरकार के संदर्भ में मैं ऐसा कहता हूं न्यायालय ने विस्मयकारी साहस का परिचय दिया। मैंने कहा कि मुझे कागज अथवा प्रथम सूचना रिपोर्ट नहीं दिखाई जा रही है। मैंने पूछा क्या कोई एक भी ऐसा विवरण है जिससे किसी भी प्रकार के अपराध में लिप्त होने का संकेत मिलता हो। न्यायालय ने कहा "श्री एन्थनी जी किसी भी अपराध से सम्बन्ध होने का कहीं भी कोई प्रमाण नहीं है और हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री को जानबूझ कर दुर्भावना से की गई गिरफ्तारी से न्यायालय ने उन्हें रिहा कर दिया। इसके बाद इस जानबूझ कर किए गए उत्पीड़न में वृद्धि हुई और उन्हें राजनीतिक दृष्टि से नष्ट करने का प्रयास किया गया। मैं पीठासीन अधिकारी का नाम नहीं लूंगा।

वह एक भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश थे, उच्चतम न्यायालय के एक अत्यन्त योग्य मुख्य न्यायाधीश। मैं तीन दिन पेश हुआ और मुझे पीठासीन अधिकारी के व्यक्तिगत विद्वेष के कारण आघात पहुंचा... (व्यवधान) मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं..... (व्यवधान)

श्री सुविनी जयपाल रेड्डी (महबूब नगर) : अध्यक्ष महोदय, इस गंभीर अवसर पर....

अध्यक्ष महोदय : आप पहली बार चुन कर आए हैं। आप कुछ सीखिए। यह ठीक है। जो कुछ हुआ है सच्चाई तो सच्चाई है।

श्री फ्रेंक एंथनी : क्या मेरे बिल्कुल अनजान मित्र बैठेंगे मैं उन्हें बताऊंगा कि वास्तव में क्या हुआ।

अध्यक्ष महोदय : श्री एंथनी जी, मैं चाहता हूं कि आप अब कृपया खत्तम करें।

(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : भावना का कोई प्रश्न नहीं है कृपया बैठ जाइये। आप कुछ सीखिए।

कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वह मेरी अनुमति के बिना बोल रहे हैं। उन्होंने जो कुछ कहा है उसे कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए। आप कुछ सीखिए। उत्तेजित मत होइये। श्री एंथनी जी कृपया अब आप समाप्त करें।

**कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री फ्रैंक एंथनी : मैं इस बात पर आ रहा हूं जो कुछ वास्तव में हुआ। देश को पता नहीं है कि वास्तव में क्या हुआ।

अध्यक्ष महोदय : उसके लिए समय नहीं है।

श्री फ्रैंक एंथनी : विश्व को इसकी जानकारी नहीं है। मैं बता रहा हूं कि किस प्रकार श्रीमती गांधी ने साहस का परिचय दिया .....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह अब काफी है।

श्री फ्रैंक एंथनी : इस जानबूझ कर किए जा रहे व्यवधानों की अनुमति मत दीजिए।** मैं केवल यह बता रहा हूं यह सब संयोग की बात है ।

मैं उच्च न्यायालय गया। मैंने आपत्ति उठाई और मुझे अवमान के लिए बुलाया गया क्योंकि मैंने न्यायालय को कह दिया था कि वह जो कुछ कर रहा है वह एक पक्षीय है और गैर-कानूनी है। श्रीमती गांधी पर मुकदमा चलाने का आदेश दिया गया था और मैं उनके लिए पेश हुआ था। मैं उच्च न्यायालय गया और मैं यही पूछ सका .....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपको इस पर क्या आपत्ति है। यह सब इतिहास का अंग है।

प्रो. मधु दण्डवते (राजापुर) : वह कभी नहीं सुधर सकते।

श्री फ्रैंक एंथनी : प्रिय मित्र, मैं इस संबंध में आपसे कुछ भी नहीं सीखना चाहता।

अध्यक्ष महोदय, एक शानदार निर्णय दिया गया जिसे पूरा श्रेय नहीं दिया गया। एक चमत्कार था– 347 पृष्ठ। इसने उसे सरकार को नंगा कर दिया, इसने उस सभापति को नंगा कर दिया। मेरे मित्र इस बारे में जानते हैं। क्या आपने 347 पृष्ठ के उस निर्णय को पढ़ा है।

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) : इस प्रकार की बातें मत कीजिए।** इस प्रकार का भाषण देकर इस अवसर को खराब मत कीजिए। हम इस प्रकार का भाषण नहीं सुनना चाहते....

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ऐसी बातों के लिए उपयुक्त अवसर नहीं है। मैंने आपको इसलिए अनुमति दी थी क्योंकि आप जल्दी जाना चाहते थे।

श्री फ्रैंक एंथनी : मैंने आपको केवल एक मिसाल दी है कि उन्हें तीन वर्षों के दौरान किन कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। हमें यह सब सहज ही नहीं भूलना चाहिए।

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित मत कीजिए। आप अब बैठते क्यों नहीं ?

(व्यवधान)*

प्रो. मधु दण्डवते : महोदय आप इन्हें रोकते क्यों नहीं।

---

*कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

**अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही वृतान्त से निकाल दिया गया।

अध्यक्ष महोदय : मैं प्रयास कर रहा हूं। वे सुन नहीं रहें हैं । यह समय कोई विवाद उठाने का नहीं है।

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप नाहक ही इतने नाराज हो रहे हैं ? इसमें कुछ भी गलत नहीं है ।

कृपया अब आप भाषण समाप्त कीजिए। मैं आपको कई बार कह चुका हूं।

श्री फ्रैंक एंथनी : मैं आपको एक उदाहरण दे रहा हूं। आपन श्रीमती गांधी की सहृदयता एवं क्षमाभाव का उल्लेख किया है। मैंने इस सदन में एक नोटिस दिया था ।

अध्यक्ष महोदय : यह अवसर क्रमिक घटनाओं के वर्णन का नहीं है, हम इस प्रकार की कोई बात नहीं सुनना चाहते.....

श्री फ्रैंक एंथनी : मैंने वैद्यलिंगम आयोग, जिसने एक भूतपूर्व प्रधानमन्त्री के पुत्र के विरुद्ध तथा स्वयं उस प्रधानमन्त्री के विरुद्ध आरोप लगाये थे, के बारे में एक संकल्प की सूचना दी थी। मैं यह बताने का प्रयास कर रहा हूं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने क्या किया था। मैं एक नोटिस देना चाहता था। तब उन्होंने मुझे बुला भेजा, और अपनी सहृदयता के कारण..... क्योंकि यह लोग चिल्ला रहे हैं और सच्चाई के बारे में नहीं जानना चाहते, मैं क्यों न कहूं.....

(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप अपना भाषण समाप्त करें। आपकी आयु का सम्मान करते हुए मैंने आपको बोलने का समय दिया था।

श्री फ्रैंक एंथनी : सहृदयता की भावना से प्रेरित होकर ही उन्होंने मुझे उस संकल्प को वापस लेने के लिए कहा था हालांकि वैद्यलिंगम आयोग ने उन पर अभ्यारोपण किया था और मैंने उस संकल्प को पेश नहीं किया।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। अब आप अपना भाषण समाप्त कीजिए। अब और अधिक समय नहीं है।

श्री फ्रैंक एंथनी : अब मैं उनकी मानवता की भावना के बारे में कहना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब आप केवल एक मिनट का समय ही और लीजिए।

श्री फ्रैंक एंथनी : जब मैं जवाहर लाल नेहरू की वर्षगांठ के एक अवसर पर भाषण दे रहा था तो मैंने जवाहर लाल जी को सही अर्थों में एक सुसंस्कृत व्यक्ति बताया था। इन्दिरा जी भी, जिनका पालन पोषण नेहरू परम्पराओं में हुआ था, एक अत्यन्त उत्कृष्ट महिला थी क्योंकि वे सभी से सहज ही घुलमिल जाती थी और इस बात में उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती-- क्योंकि इस सम्बन्ध में वे जवाहर लाल से भी आगे थी--वह जाति, सम्प्रदाय अथवा धर्म का भेदभाव

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

किये बिना सभी वर्गों की जनता से सहज ही तादात्मय स्थापित कर सकती थी। मैं आप को यह बात अपने निजी अनुभव से कह रहा हूं.....

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्रत्येक व्यक्ति ने अपना आवंटित समय ही लिया है। अब आप भी अपना भाषण समाप्त कीजिए। सबको बोलने का समय दिया गया है।

श्री फ्रैंक एंथनी : मैं आपको उनकी गरिमा और सहृदयता का एक उदाहरण दे रहा हूं। उनका मेरे तथा मेरी पत्नी के साथ मैत्रीभाव था। मेरी पत्नी, तीन महीने तक गंभीर रूप से बीमार रहीं। अत्यन्त व्यस्त होने के बावजूद भी वे नियमित रूप से सप्ताह में एक बार उससे मिलने अवश्य आती थीं।

(व्यवधान)

हमारे मित्रों को क्यों आपत्ति हो रही है। मैं आपको उनके व्यक्तिगत गुणों के बारे में बता रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब अधिक समय नहीं बचा है।

श्री फ्रैंक एंथनी : में नहीं जानता कि उन्हें यह कैसे पता चलता था कि मेरा जन्मदिन किस तारीख को होता है किन्तु वह हमेशा मुझे मेरे जन्मदिन पर बधाई देती थीं। इस सम्बन्ध में मैं सबसे अधिक अभिभूत उनकी इस बात से हुआ कि 1983 में जब वह अमरीका जा रही थीं तो उन्होंने मुझे वायुयान से पत्र लिखा।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

श्री फ्रैंक एंथनी : मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। मैंने अभी तक अपनी बात पूरी नहीं की है। आप मेरी इस प्रकार खिल्ली उड़ाने वालों के सामने मत झुकिए। (व्यवधान) वे सभी अल्प संख्यकों की सच्ची मित्र थी। मुझे जिस जाति से सम्बद्ध होने का गौरव प्राप्त है उसके प्रति उन्होंने अपनी भावभीनी प्रशंसा व्यक्त की थी।

मैं एक अन्य बात का भी उल्लेख करना चाहता हूं। मेरे मित्रों को यह बात पसन्द नहीं आयेगी। मैं उन्हें निजी रूप से जानता हूं। मैंने श्रीमती इन्दिरा गांधी के बारे में एक बात यह देखी थी कि उन्हें पढ़ने का बहुत ही शौक था.....

अध्यक्ष महोदय : कृपया, अब आप बैठ जाइए।

श्री फ्रैंक एंथनी : कृपया मुझे कहने दीजिए, वह एक उत्कृष्ट प्रशासक थी। वह उत्कृष्ट प्रशासक क्यों थी ?

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप अपना स्थान ग्रहण करें।

श्री फ्रैंक एंथनी : कृपया, आप मेरी बात सुनें। आपने उनके बारे में इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा क्योंकि आप मेरी भांति उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे। आप उन्हे मेरी तरह नहीं जानते थे वह अपनी डाक की ओर पूरी तरह ध्यान देती थी। जब भी मैं उन्हें पत्र लिखता था, वे उसका उत्तर 48 घन्टे के अन्दर ही दे देती थी।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि आपने बहुत समय ले लिया है ।

श्री फ्रैंक एंथनी : वह अनेक मन्त्रियों के समक्ष स्वयं में एक उदाहरण थी । मैंने इस बात को इस लिए नोट किया क्योंकि मैंने उनके साथ कुछ जटिल कानूनी समस्यायों पर चर्चा की थी । वह कम से कम समय में समस्या की तह तक पहुंच जाती थी । वे अत्यन्त तीक्ष्ण स्मरणशक्ति की स्वामिनी थी । संसद में 40 वर्ष के अपने कार्यकाल में और विधि वर्ग के 50 वर्ष के अपने नेतृत्व काल में उनकी तरह दूसरा व्यक्ति मैंने सरदार विट्ठलभाई पटेल को पाया जो समस्या को तह तक कम से कम समय में पहुंच सके । उनमें इस प्रकार की विलक्षण प्रशासनिक प्रतिभा थी ।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद । अब आप समाप्त करें । मुझे अन्य सदस्यों को भी भाषण देने का अवसर देना है ।

श्री फ्रैंक एंथनी : कृपया आप मुझे केवल दो मिनट का समय और दे दीजिए । आपने किसी भी और सदस्य को भाषण समाप्त करने के लिए नहीं कहा । चूंकि कुछ लोग खिल्ली उड़ा रहे हैं.....
.....**

अध्यक्ष महोदय : सभी सदस्यों ने उनको दिये गये समय में ही अपने विचार व्यक्त किए हैं ।

एक माननीय सदस्य : कृपया बैठ जाईए ।

श्री फ्रैंक एंथनी : मैंने तो आपको कभी बैठने के लिए नहीं कहा ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपको उपलब्ध समय के अनुसार बोलने के लिए समय दिया है । मैं आपकी सहायता करने का प्रयास किया है । आपको भी मेरी सहायता करनी चाहिए ।

श्री फ्रैंक एंथनी : यदि मैं दो मिनट में समाप्त कर दूं तो आपको क्या आपत्ति है ? (व्यवधान) मैंने एक सम्पादकीय लेख लिखा था–उसमें मैंने यह कहा था :

> "इन्दिरा गांधी ने एक आदर्श जीवन व्यतीत किया और राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुति दी ।"

मृत्यु के एक दिन पहले उन्होंने भविष्य वक्ता की तरह एक स्मृति लेख लिखा । आपने उस की कुछ पंक्तियां पढ़ी हैं । मैं कुछ और पढ़ रहा हूं । उन्होंने यह कहा था :

> "मुझे विश्वास है कि मेरे रक्त की प्रत्येक बूंद मेरे राष्ट्र के विकास में सहायक होगी और इसे अधिक मजबूत और गतिशील बनायेगी ।"

भारत की जनता ने उनके सुपुत्र के नेतृत्व में उनके दल के पक्ष में एतिहासिक निर्णय देकर उनकी भविष्यवाणी को अमर कर दिया है । ताकि उनके नेतृत्व में देश और मजबूत, गतिशील और अखण्ड बन सके ।

प्रोफेसर सैफुद्दीन सोज (बारामूला) : मेरे लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी की कायरतापूर्ण हत्या से जम्मू और काश्मीर के लोगों को हुई पीड़ा को व्यक्त कर पाना .... मेरे लिए अत्यन्त कठिन है । जैसा हम जानते हैं वह भारत की सर्वाधिक विख्यात नागरिक थीं । वह एक महान देशभक्त और

**अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही वृतान्त से निकाल दिया गया है।

शक्तिशाली नेता थीं और भारत को शक्तिशाली और महान देखना चाहती थीं। हमें स्मरण आता है कि किस प्रकार श्रीमती इंन्दिरा गांधी जल्दी-जल्दी सदन में आया करती थीं, अपना स्थान ग्रहण करती थीं और संसदीय कार्यों सम्बंधी कागजात में खो जाती थीं। वह पूरी जागरूकता और विश्वास के साथ प्रश्नों के उत्तर देती थीं और क्रोध किये बिना वाद-विवाद में भाग लेती थीं। मेरे विचार से वह राजनीति में काफी व्यावहारिक थीं और राजनीति है भी ऐसी चीज। सातवीं लोक सभा में आने तक मैंने श्रीमती इन्दिरा गांधी को दूर से देखा था। देश के सामने जो आर्थिक समस्याएं थीं—विशेषकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में—संसद में भी और संसद के बाहर भी—मैंने देखा कि उन्होंने पूरी ईमानदारी के साथ उनको हल करने की कोशिश की। प्रदूषण के बारे में उन्हें काफी चिंता थीं और वह कहती थीं कि हमारे नगर और ग्रामीण क्षेत्र प्रदुषण से मुक्त रहने चाहिए। मैंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विशेष रूप से उल्लेख किया है क्योंकि मैंने देखा कि इस क्षेत्र में वह अपने महान पिता की तरह आदर्शवादी थीं।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में निर्गुट आंदोलन के अध्यक्ष के रूप में और विश्व शांति और अंतर्राष्ट्रीय समझ-बूझ की कटर समर्थक के रूप में मैं उन्होंने भारत को गौरव प्रदान किया। उन्हें विरासत में एक महान भारत मिला था, और उन्होंने उसे और भी महान बना दिया। दुर्भाग्यवश, हमारे कुछ दुश्मनों ने नेशनल कांफ्रेस और श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीच मन-मुटाव पैदा करने की कोशिश की। मैं इस सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि डॉ० फारुक अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली नेशनल कांग्रेस और हम डॉ. अब्दुल्ला के सभी साथी श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति सर्वोच्च आदर रखते थे और जम्मू और काश्मीर राज्य में शोक मनाने वालों में सबसे अग्रणी हमारी माता बेगम शेख मोहम्मद अब्दुल्ला थीं।

इस समय जब श्री राजीव गांधी को सभी वर्गों के लोगों से सहानुभूति और समर्थन की आवश्यकता है और इस समय जब श्री राजीव गांधी ने एक बहुत अच्छी शुरुआत की है हमें आशा है कि वह भारत को अत्यधिक उन्नत और समृद्ध बनायेंगे। धन्यवाद।

श्री पीयूष तिरकी (अलीपुर द्वार) : महोदय, सदन में श्रीमती इन्दिरा गांधी की अनुपस्थिति महसूस की जा रही है। उन्होंने अपने लिए और अपने देश के लिए बहुत ऊंचा स्थान बनाया है। उन्हें अपने पर गर्व था, अपने परिवार पर गर्व था किन्तु सबसे अधिक उन्हें देश की गरिमा और महानता पर गर्व था। वह हमेशा साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयता के विरुद्ध बहादुरी से लड़ी और देश की एकता तथा अखण्डता का प्रतीक बन गईं। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में श्रीमती इन्दिरा गांधी को शांति के प्रबल समर्थक और निर्गुट आंदोलन के आयोजक के रूप में भारी ख्याति मिली। उन्होंने हमेशा 'तीसरी दुनिया' के देशों की समस्याओं और मांगों को उठाया और विकासशील देशों के समर्थन में एक नयी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था आरम्भ करने के पक्ष को सशक्त समर्थन दिया।

इन्दिरा गांधी 70 करोड़ लोगों की आंखों का तारा थीं। उन्हें लोग "दुर्गादेवी", "इन्दिर अम्मा" "भारत माता" "भारतीय जोन आफ आर्क" आदि कहते थे। वह विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली राजनेता मानी जाने के साथ-साथ विश्व की सर्वाधिक सशक्त महिला तथा प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी भी मानी जाती थीं। वह सभी प्रकार की कठिनाइयों और आपदाओं के सम्मुख पहाड़ की तरह डट कर खड़ी हो गई।

उनकी मृत्यु से जो हानि हुई है उसे न तो शब्दों में बयान किया जा सकता है और न ही किसी मापदण्ड से मापा जा सकता है। मृत्यु एक अंतहीन संताप है। उनकी घृणित हत्या की जितने कड़े

शब्दों में निन्दा की जाए, कम है। 31 अक्तूबर, 1984 का दिन भारत के इतिहास का सबसे काला दिन था जब श्रीमती इन्दिरा गांधी की उनके अपने निवास के लॉन में उन्हीं के दो अंगरक्षकों ने हत्या कर दी।

महोदय, वह प्राय: समाजवाद लाने की बात करती थीं। उस कार्य को वह पूरा नहीं कर पायीं। मुझे आशा है कि हमारे युवा प्रधानमंत्री हमारे देश को समाजवाद की ओर ले जाने के कार्य को जारी रखेंगे और यद्यपि कई कठिनाइयां सामने हैं पर मुझे आशा है वह उनका सामना करेंगे और उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक निभायेंगे।

मैं अपने दल आर. एस. पी. की ओर से और अपनी ओर से दिवंगत प्रधानमंत्री को श्रद्धांजली पेश करता हूं और राष्ट्र के प्रति उनकी चिरस्थायी सेवा को कृतज्ञता के साथ स्मरण करता हूं।

श्री इब्राहिम सुलेमान सेठ (मंजेरी): अध्यक्ष महोदय, 31 अक्तुबर, 1984 का दिन स्वतन्त्र भारत के इतिहास में सर्वाधिक काला दिन था, जिस दिन हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एक क्रूर हत्यारे की गोली का शिकार बन गईं। यह एक ऐसी हत्या थी, जो भयानक होने के साथ ही साथ सर्वाधिक निन्दनीय भी थी। यह एक ऐसी त्रासदी थी जिससे समस्त राष्ट्र को आघात पहुंचा था और यह स्तब्ध रह गया था। किसी ने भी यह नहीं सोचा था कि इस काले दिन को देश एक ऐसी त्रासदी की लपेट में आ जायेगा। वास्तव में, मैं इस महान राष्ट्रीय त्रासदी से समस्त राष्ट्र में दु:ख एवं शोक की जो लहर फैल गई थी, उसे सही ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए शब्द नहीं पा रहा हूं। मैं तो यही कह सकता हूं कि वह पूर्णतया देश के प्रति समर्पित थीं और उसकी एकता और प्रगति के प्रति उनका योगदान बेजोड़ था। राष्ट्रमंडल में उनका व्यक्तित्व विशाल था और उन्हें न केवल भारत की जनता से ही प्रशंसा एवं सम्मान मिला था अपितु सारा संसार उनका प्रशंसक था तथा आदर करता था। अत: उनकी हत्या न केवल इस देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है, बल्कि समग्र विश्व के लिए एक अपूरणीय क्षति है। मुझे यहां उर्दू का एक शेर याद आ रहा है जो कि इस स्थिति पर सही उतरता है :—

"ऐ बागबाने गुलशने हस्ती ये क्या किया?
जाने चमन था गुल जो, वही तुने चुन लिया।

—मैं यह कहना चाहूंगा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ मेरे सम्बन्ध गत 15 वर्षों से अधिक समय से भी बहुत ही मधुर रहे हैं। मैं तो यहां तक कहूंगा कि मेरे दल इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग का वह सदैव बहुत ही आदर करती थीं। निस्सन्देह, श्रीमती इन्दिरा गांधी जी की मृत्यु न केवल हमारे दल के लिए, बल्कि समस्त राष्ट्र के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी अपने जीवन में महान थीं और उनकी मृत्यु भी महान थी। ऐसी महान हस्तियां सदा पैदा नहीं होती हैं, सदियों में एक बार होती हैं—

"हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।।

—अब हमारे नये गतिशील युवा प्रधानमंत्री ने एक बड़े ही संकटपूर्ण समय में उत्तरदायित्व सम्भाला है। इस महान त्रासदी के बाद उन्हें भारी जनादेश भी मिला है, जिससे उन्हें बहुत बड़े उत्तरदायित्व को निभाना है। इस समय, उन्हें और समस्त राष्ट्र को अपनी शोक संवेदना प्रेषित करते हुए, मैं देश को शान्ति और प्रगति की ओर ले जाने के लिए उनकी सफलता की कामना करता हूं। जहां तक मेरे दल का सम्बन्ध है, मैं उन्हें सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन देता हूं।

[हिन्दी]

श्री चंदुपाटला जंगा रेड्डी (हनमकोंडा) : माननीय अध्यक्ष जी, इन्दिरा जी की जो हत्या हुई, उसके अभाव को पूरा करने के लिए न केवल भारत में, बल्कि दुनियां में कोई भी शक्ति अभी नहीं है ।.इन्दिरा जी की विशेषताओं के बारे में कभी हम सोचें तो वह एक साहसी स्त्री थीं । 1978 में कांग्रेस दो भागों में होने के बाद जो लोग उनसे अलग हो गये, वे फिर उनके पास आ गये क्योंकि इन्दिरा जी कांग्रेस की शक्ति थीं । उसी शक्ति की वजह से आज जो इन्दिरा कांग्रेस के लोग यहां बैठे हैं, वह उनके दिवंगत हो जाने पर भी उसी शक्ति के प्रभाव से यहां पर जीतकर आये हैं ।

इन्दिरा जी की वजह से भारत की शान बढ़ी है, हिस्ट्री बढ़ी है और नान एलाइनमेंट मूवमेंट में उन्होंने दुनिया के गरीब लोगों के लिए जितना किया, वह कभी हम नहीं भूल सकते ।

मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी बी. जे. पी. की ओर से इन्दिरा जी की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करता हूं और श्री राजीव गांधी उनके सुपुत्र हैं, उनके साथ हम सहानुभूति प्रकट करते हैं ।

[अनुवाद]

श्री अमर राय प्रधान (कूच बिहार) : मैं अपने दल, फारवर्ड ब्लाक की ओर से, दुःख और व्यथा के साथ श्रीमती इन्दिरा गांधी की याद में, जिनकी कि उन्हीं के घर में उन्हीं के सुरक्षा कर्मियों ने हत्या कर दी थी, सम्मान और श्रद्धांजली प्रदान करने में आपके साथ हूं ।

इन्दिरा गांधी के रूप में हमने अपने समय के महान और साहसी मानव को खो दिया है । हमारे श्रीमती गांधी से विचार धारा संबंधी मौलिक मतभेद हो सकते हैं और राजनीतिक एवं आर्थिक विचार भी हमारे भिन्न हो सकते हैं, परन्तु इस बात से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता है कि राष्ट्र के लिए उन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया है । उनकी हत्या की गई और वह शहीद हो गई ।

मैं बंगला देश आन्दोलन के उन दिनों को और आन्दोलन के समर्थन में श्रीमती गांधी की भूमिका को कभी नहीं भूल सकता । बंगला देश की स्थापना से श्रीमती गांधी के नाम को नहीं मिटाया जा सकता है । हम गुट-निरपेक्ष आन्दोलन में उनकी महती भूमिका और विश्व शान्ति के लिए उठाए गये उनके ठोस कदमों को भूला नहीं सकते हैं । मैं रवीन्द्र संगीत से उनके प्रिय गीत की कुछ पंक्तियां उद्धृत करते हुए उन्हें एक बार फिर आदर और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं :

"जदी तोर डाक सुने कियो ना आसे तबे एकला चलो रे ।"

यदि कोई भी तुम्हारे आह्वान पर नहीं आता है तो अकेले बढ़े चलो ।

श्री जार्ज जोसफ मुंडाकल (मुवत्तुपुझा) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों द्वारा व्यक्त भावनाओं में मैं उनके साथ हूं । श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या वस्तुतः एक राष्ट्रीय विपदा है । इससे इस देश के लोगों को गहरा आघात पहुंचा है । उनकी शहादत से उनका यश बढ़ा है और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति में अभिवृद्धि हुई है । उन्होंने सदैव राष्ट्र की आजादी, देश की एकता और अखण्डता के लिए संघर्ष किया । मैं तो कहूंगा कि अल्पसंख्यकों, विशेषकर ईसाई समुदाय के अधिकारों का महान समर्थक हमसे छिन गया है। 1977 में अपनी पराजय के बाद वह मिट्टी से उठकर शान के साथ पुनः सत्ता में आई । इतना स्नेही और सक्षम प्रधान मंत्री पाने के लिए हमें सदियों तक प्रतीक्षा करनी होगी । मैं अपनी और अपने दल केरल कांग्रेस की ओर से अपनी महान नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी की असामयिक मृत्यु पर गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करता हूं ।

[हिन्दी]

श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसे (हैदराबाद) : जनाब स्पीकर साहब, मैं अपनी पार्टी, इत्तिहादुल-मुसलमीन, की तरफ़ से, मिसेज़ गांधी की मौत पर जो ताजीरी करारदाद पेश की गई है, उसके साथ अपने आप को वाबस्ता करते हुए यह कहूंगा कि इन्सान का पैदा होना खुद उसकी मौत की दलील है। लेकिन पैदाइश से लेकर मौत तक अगर वह दुनिया में कोई अच्छा काम करता है, तो उसके नक़्श इन्सानी जिन्दगियों के ऊपर रह जाते हैं और उन्हीं की याद हम मनाते हैं।

मिसेज़ गान्धी ने अपने दौर में जो कारनामे अंजाम दिए, उन्होंने हिन्दुस्तान के अवाम के दिलों पर नक़्श को छोड़ा और हिन्दुस्तान को दुनिया में सर बुलन्द करने का मौका अता फरमाया। मुझे वह वक्त याद है, जब हैदराबाद के अन्दर बहुत भयानक फसाद हुए थे। फ़सादज़दा इलाके को देखने के लिए मिसेज़ गांधी खुद हैदराबाद तशरीफ लाई थीं और उनके साथ चीफ मिनिस्टर भी गए। बावजूद इसके कि उनकी सिक्युरिटी के लोगों ने कहा कि वहां उतरने में आपके लिए खतरा है, मिसेज़ गांधी बग़ैर किसी झिझक के उस ख़तरे के अन्दर उतरीं और उतर कर वहां के अवाम को दिलासा दिलाया। हालांकि उनके साथ जो और लोग थे, वे अपनी जान के लिए डरते रहे, लेकिन मिसेज़ गांधी बेधड़क वहां उतरीं और उन लोगों को दिलासा दिलाया। उसके बाद उन्होंने उस एक-एक जगह और मुकाम का मुआयना किया, जहां लोगों को तकलीफ पहुंची थी।

मैं अपने आप को उन जज़बात से वाबस्ता करता हूं, जिनका इज़हार इस एवान में किया गया है, और मुझे यकीन है कि उनके जानशीन उस काम को पूरा करेंगे, जो उन्होंने अधूरा छोड़ा था। ख़ासतौर से मुसलमानों से मुताल्लिका जिन मसायल को हल करने के लिए जिस तरीके से उनकी वालिदा मोहतरिमा दिलचस्पी का इज़हार करती थीं, मुझे तवक्को है कि उनके जानशीन और बेटे, श्री राजीव गांधी, भी उसी तरह मुस्लिम अकलियत के मसायल और मुश्किलात को हल करने के लिए तवज्जु देंगे। ख़ासतौर आन्ध्र प्रदेश जिस दौर से गुजर रहा है उसको मद्देनज़र रखते हुए वह उसकी तरफ ख़ासी तवज्जुह फरमायेंगे और अपनी वालिदा की याद को हमेशा बरकरार रखेंगे।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूं कि अब सभा संकल्प से सर्व सम्मति से सहमत है।

(संकल्प स्वीकृत हुआ)।

अध्यक्ष महोदय : अब, सदस्यगण कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हों।

(तत्पश्चात सदस्यगण कुछ क्षण के लिए मौन खड़े रहे)

अध्यक्ष महोदय : सभा अब कल 18 जनवरी, 1985 के 11 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

2.56 म.प.

[तत्पश्चात लोक सभा शुक्रवार, 18 जनवरी, 1985/28 पौष, 1906 (शक) को ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई]।